CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2024 with Solution PDF-Set 2/S/1 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 8 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. भारतीय आयुर्वेद के अनुसार औषधीय चाय (हर्बल टी) को वैदिक चाय के तौर पर भी जाना जाता है। यह बेहद स्वादिष्ट और औषधीय गुणों से भरपूर होती है। इसमें पाए जाने वाले पोषक तत्त्व न सिर्फ शरीर में तरल पदार्थों की पूर्ति करते हैं बल्कि यह दूसरी चाय से भी भिन्न होती है। औषधीय चाय पीकर दिनभर की थकान तो दूर होती ही है, साथ ही यह शरीर को किसी भी प्रकार का नुकसान नहीं पहुँचाती है। बहुत कम लोग जानते हैं कि औषधीय चाय के नियमित सेवन से शरीर की प्रतिरक्षा भी बढ़ाई जा सकती है। शारीरिक प्रतिरक्षा शक्ति मज़बूत होने से शरीर को विभिन्न बीमारियों और संक्रमण से लड़ने में मदद मिलती है। अगर आप लंबे समय से किसी बीमारी से जूझ रहे हैं, तो औषधीय चाय के सेवन से उसके प्रभाव को कम कर सकते हैं। बेहतर स्वास्थ्य के लिए सामान्य चाय की अपेक्षा औषधीय गुणों से भरपूर चाय को ही प्राथमिकता देना बुद्धिमानी बतलाया गया है। इसे पीने से शरीर तो स्वस्थ रहता ही है, दिल और दिमाग भी ताज़गी से भरपूर रहता है।

यह एक प्रकार से आयुर्वेदिक चाय के रूप में भी जानी जाती है और इसमें कैफीन की मात्रा बिलकुल भी नहीं होती है, जबकि दूसरी चाय व कॉफ़ी में कैफीन की अधिक मात्रा होने से शरीर में कई स्वास्थ्य समस्याएँ जन्म ले लेती हैं और धीरे-धीरे शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगता है। औषधीय चाय में ऐसे कई गुण पाए जाते हैं, जिनसे अंदरूनी और बाहरी तौर पर शरीर की सफाई की जा सकती है। शरीर में मौजूद अशुद्धियों को इसके सेवन से काफी हद तक दूर किया जा सकता है। इससे त्वचा का संक्रमण खत्म होता है और त्वचा स्वस्थ भी होती है। अगर नियमित तौर पर हर्बल चाय का सेवन किया जाए, तो मुँहासों की समस्या से भी निजात पाई जा सकती है। यह सोरायसिस और एक्ज़िमा का इलाज करने में भी फायदेमंद है। त्वचा को स्वस्थ बनाए रखने के लिए औषधीय चाय का सेवन किया जा सकता है।

आजकल की व्यस्त और अनियमित जीवन शैली के कारण बहुत से लोग कम उम्र से ही मोटापे का शिकार होने लग जाते हैं। बढ़ते मोटापे के कारण हृदय रोग से लेकर मधुमेह तक कई समस्याएँ हो सकती हैं। वजन घटाने और मोटापा कम करने के लिए इस चाय को काफी लाभदायक माना जाता है। इसमें कुछ ऐसे तत्त्व पाए जाते हैं, जो कैलोरी और वजन को कम करने के लिए मेटाबॉलिज़्म की प्रक्रिया को ठीक करते हैं। [10 अंक]

1(i). उपर्युक्त गद्यांश का विषय है : [1 अंक]

(A) औषधीय चाय : एक परिचय

(B) औषधीय चाय के प्रकार

(C) औषधीय चाय और सामान्य चाय में अंतर

(D) वर्तमान जीवन में चाय की आवश्यकता

सही उत्तर: (A) औषधीय चाय : एक परिचय

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश आधारित उत्तर केवल दिए गए अंश के कथनों और उनके आपसी संबंध पर आधारित होना चाहिए।
- विकल्प चुनते समय मुख्य विचार, सीधे उल्लिखित तथ्य और कथन की सीमा को ध्यान में रखकर सभी विकल्प जाँचे जाते हैं।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक आधार पहचानें पूरे गद्यांश में औषधीय चाय का परिचय देते हुए उसके गुण, सामान्य चाय से अंतर तथा स्वास्थ्य संबंधी लाभ बताए गए हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (B) में चाय के प्रकार पूछे गए हैं, जबकि प्रकारों का वर्गीकरण नहीं है। (C) केवल तुलना तक सीमित है और (D) सामान्य चाय की आवश्यकता बताता है; दोनों पूरे गद्यांश को नहीं समेटते।

चरण 3: निष्कर्ष औषधीय चाय : एक परिचय। अत: सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय सभी अनुच्छेदों को समेटने वाला विकल्प चुनिए, किसी एक लाभ पर केंद्रित विकल्प नहीं।

1(ii). लोग वर्तमान समय में औषधीय चाय के सेवन की ओर क्यों प्रेरित हो रहे हैं ? [1 अंक]

(A) अधिक मुनाफ़ा होने से

(B) चाय का बाज़ार होने से

(C) आवश्यक पेय होने से

(D) स्वास्थ्य के प्रति सचेत होने से

सही उत्तर: (D) स्वास्थ्य के प्रति सचेत होने से

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश आधारित उत्तर केवल दिए गए अंश के कथनों और उनके आपसी संबंध पर आधारित होना चाहिए।
- विकल्प चुनते समय मुख्य विचार, सीधे उल्लिखित तथ्य और कथन की सीमा को ध्यान में रखकर सभी विकल्प जाँचे जाते हैं।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक आधार पहचानें लेखक बेहतर स्वास्थ्य के लिए औषधीय गुणों से भरपूर चाय को प्राथमिकता देना बुद्धिमानी बताता है। थकान दूर करना, प्रतिरक्षा बढ़ाना और त्वचा को स्वस्थ रखना स्वास्थ्य से संबंधित लाभ हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (A) के मुनाफ़े और (B) के बाज़ार का गद्यांश में उल्लेख नहीं है। (C) भी उचित नहीं, क्योंकि इसे अनिवार्य पेय नहीं बताया गया; प्रेरणा स्वास्थ्य की चिंता है।

चरण 3: निष्कर्ष स्वास्थ्य के प्रति सचेत होने से। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रेरणा पूछने पर लाभों के पीछे का साझा उद्देश्य पहचानिए; यहाँ वह स्वास्थ्य की देखभाल है।

1(iii). वैदिक चाय की विशेषता होती है : [1 अंक]

(A) प्राकृतिक होना

(B) स्वादिष्ट होना

(C) औषधीय गुणों से युक्त होना

(D) सरलता से उपलब्ध होना

सही उत्तर: (C) औषधीय गुणों से युक्त होना

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश आधारित उत्तर केवल दिए गए अंश के कथनों और उनके आपसी संबंध पर आधारित होना चाहिए।
- विकल्प चुनते समय मुख्य विचार, सीधे उल्लिखित तथ्य और कथन की सीमा को ध्यान में रखकर सभी विकल्प जाँचे जाते हैं।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक आधार पहचानें प्रारंभ में औषधीय चाय को वैदिक चाय कहा गया है और उसे औषधीय गुणों से भरपूर बताया गया है। आगे बीमारियों, संक्रमण और त्वचा संबंधी लाभ इसी गुण को स्पष्ट करते हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (A) प्राकृतिक होने का स्वतंत्र कथन नहीं दिया गया। (B) स्वादिष्ट होना एक गुण अवश्य है, पर वैदिक चाय की केंद्रीय पहचान औषधीय गुण हैं। (D) सरल उपलब्धता का उल्लेख नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष औषधीय गुणों से युक्त होना। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: विशेषता पूछने पर वस्तु की मुख्य पहचान देखिए; स्वाद जैसे सहायक गुण को केंद्रीय गुण से अलग रखिए।

1(iv). हर्बल चाय साधारण चाय से भिन्न कैसे है ? [1 अंक]

(A) अधिक स्वादिष्ट होने से

(B) कैफीन नहीं होने से

(C) अधिक लाभदायक होने से

(D) शरीर की सफाई करने से

सही उत्तर: (B) कैफीन नहीं होने से

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश आधारित उत्तर केवल दिए गए अंश के कथनों और उनके आपसी संबंध पर आधारित होना चाहिए।
- विकल्प चुनते समय मुख्य विचार, सीधे उल्लिखित तथ्य और कथन की सीमा को ध्यान में रखकर सभी विकल्प जाँचे जाते हैं।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक आधार पहचानें दूसरे अनुच्छेद में स्पष्ट है कि आयुर्वेदिक चाय में कैफीन की मात्रा बिलकुल नहीं होती, जबकि दूसरी चाय और कॉफ़ी में कैफीन अधिक होती है। यही प्रत्यक्ष तुलना प्रश्न का आधार है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (A) अधिक स्वादिष्ट होने की तुलना नहीं की गई है। (C) लाभदायक होना व्यापक बात है। (D) सफाई करना एक लाभ है; सामान्य चाय से स्पष्ट अंतर कैफीन की अनुपस्थिति के रूप में बताया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष कैफीन नहीं होने से। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: भिन्नता पूछने पर उस वाक्य को खोजिए जहाँ दोनों वस्तुओं की सीधी तुलना की गई हो।

1(ix). शरीर को विभिन्न बीमारियों से बचाया जा सकता है : [1 अंक]

(A) शारीरिक श्रम को महत्त्व देकर

(B) रोज हर्बल चाय का सेवन कर

(C) शारीरिक प्रतिरक्षा को विकसित कर

(D) दिल, दिमाग को स्वस्थ रख कर

सही उत्तर: (C) शारीरिक प्रतिरक्षा को विकसित कर

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश आधारित उत्तर केवल दिए गए अंश के कथनों और उनके आपसी संबंध पर आधारित होना चाहिए।
- विकल्प चुनते समय मुख्य विचार, सीधे उल्लिखित तथ्य और कथन की सीमा को ध्यान में रखकर सभी विकल्प जाँचे जाते हैं।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक आधार पहचानें गद्यांश कहता है कि शारीरिक प्रतिरक्षा शक्ति मज़बूत होने से विभिन्न बीमारियों और संक्रमण से लड़ने में मदद मिलती है। इसलिए बीमारियों से बचाव का सीधा आधार प्रतिरक्षा का विकास है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (A) शारीरिक श्रम का प्रसंग नहीं है। (B) चाय पीना प्रतिरक्षा बढ़ाने का साधन बताया गया है, पर प्रश्न का सीधा उत्तर प्रतिरक्षा है। (D) दिल और दिमाग की ताज़गी अलग लाभ है।

चरण 3: निष्कर्ष शारीरिक प्रतिरक्षा को विकसित कर। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: बीमारी से बचाव का प्रश्न हो तो साधन और प्रत्यक्ष रक्षा करने वाली क्षमता में अंतर कीजिए।

1(v). गद्यांश के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए :

कथन I : वैदिक चाय ही 'हर्बल टी' है।

कथन II : इससे प्रतिरक्षा तंत्र मज़बूत होता है।

कथन III : बेहतर स्वास्थ्य के लिए औषधीय चाय को प्राथमिकता देना अनिवार्य है।

कथन IV : इस चाय में स्वाद की कमी होती है। [1 अंक]

(A) केवल कथन I सही है।

(B) केवल कथन II और III सही हैं।

(C) केवल कथन I, II, III सही हैं।

(D) केवल कथन I और IV सही हैं।

सही उत्तर: केवल कथन I और II सही हैं; दिए गए विकल्पों में उनका संयोजन उपलब्ध नहीं है

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश आधारित उत्तर केवल दिए गए अंश के कथनों और उनके आपसी संबंध पर आधारित होना चाहिए।
- विकल्प चुनते समय मुख्य विचार, सीधे उल्लिखित तथ्य और कथन की सीमा को ध्यान में रखकर सभी विकल्प जाँचे जाते हैं।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक आधार पहचानें कथन I सही है, क्योंकि पहली पंक्ति औषधीय चाय अर्थात हर्बल टी को वैदिक चाय कहती है। कथन II भी सही है, क्योंकि नियमित सेवन से प्रतिरक्षा बढ़ने की बात कही गई है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें कथन III में अनिवार्य शब्द है, जबकि गद्यांश प्राथमिकता देने को बुद्धिमानी बताता है; सलाह अनिवार्यता नहीं है। कथन IV भी गलत है, क्योंकि चाय को बेहद स्वादिष्ट कहा गया है। (A) में सही कथन II छूटता है, (B) और (C) गलत कथन III लेते हैं तथा (D) गलत कथन IV लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष केवल कथन I और II सही हैं; दिए गए विकल्पों में उनका संयोजन उपलब्ध नहीं है।

त्वरित सुझाव: कथनों की जाँच में अनिवार्य जैसे शब्दों पर ध्यान दें; सलाह को बाध्यता मानना अर्थ बदल देता है।

1(vi). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : वर्तमान समय में जीवन शैली व्यस्त और अनियमित है।

कारण : बहुत से लोग मोटापे के शिकार हो जाते हैं।

विकल्प : [1 अंक]

(A) कथन सही है, लेकिन कारण गलत है।

(B) कथन सही नहीं है, लेकिन कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश आधारित उत्तर केवल दिए गए अंश के कथनों और उनके आपसी संबंध पर आधारित होना चाहिए।
- विकल्प चुनते समय मुख्य विचार, सीधे उल्लिखित तथ्य और कथन की सीमा को ध्यान में रखकर सभी विकल्प जाँचे जाते हैं।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचें गद्यांश में आजकल की जीवन शैली को व्यस्त और अनियमित कहा गया है। इसलिए वर्तमान जीवन

शैली के विषय में दिया गया कथन सही है; यह बात पाठ में सीधे मौजूद है।

चरण 2: कारण की सत्यता जाँचें बहुत से लोगों के कम उम्र से ही मोटापे का शिकार होने का उल्लेख भी गद्यांश में है। इसलिए कारण के रूप में दिया गया वाक्य तथ्य की दृष्टि से सही है। अतः (A) और (B) अस्वीकार्य हैं।

चरण 3: व्याख्या का संबंध पहचानें गद्यांश के अनुसार व्यस्त और अनियमित जीवन शैली से मोटापा बढ़ता है। मोटापा इस जीवन शैली का परिणाम है; वह जीवन शैली के व्यस्त और अनियमित होने की व्याख्या नहीं करता। इसलिए (D) गलत है और (C) सही है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: कथन और कारण सत्य होने पर भी जाँचिए कि कारण वास्तव में कथन को समझाता है या उसका परिणाम है।

1(vii). वजन घटाने में हर्बल चाय सहायक होती है क्योंकि : [1 अंक]

(A) भूख को कम कर देती है।

(B) कोशिकाओं की मरम्मत होती है।

(C) पाचन तंत्र को मज़बूत बनाती है।

(D) मेटाबॉलिज़्म की प्रक्रिया ठीक करती है।

सही उत्तर: (D) मेटाबॉलिज़्म की प्रक्रिया ठीक करती है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश आधारित उत्तर केवल दिए गए अंश के कथनों और उनके आपसी संबंध पर आधारित होना चाहिए।
- विकल्प चुनते समय मुख्य विचार, सीधे उल्लिखित तथ्य और कथन की सीमा को ध्यान में रखकर सभी विकल्प जाँचे जाते हैं।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक आधार पहचानें अंतिम अनुच्छेद के अनुसार इस चाय में कुछ ऐसे तत्त्व होते हैं जो कैलोरी और वजन को कम करने के लिए मेटाबॉलिज़्म की प्रक्रिया ठीक करते हैं। इसलिए वजन घटने का बताया गया कारण यही है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (A) भूख कम होने और (B) कोशिकाओं की मरम्मत का उल्लेख नहीं है। (C) पाचन तंत्र मज़बूत करने को वजन घटने का कारण नहीं बताया गया। बाहरी जानकारी के स्थान पर गद्यांश का स्पष्ट कथन चुनना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष मेटाबॉलिज़्म की प्रक्रिया ठीक करती है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: क्योंकि वाले प्रश्न में परिणाम का नहीं, गद्यांश में उसके साथ दिया गया सटीक कारण चुनिए।

1(viii). गद्यांश के आधार पर हृदय रोग और मधुमेह जैसी समस्याओं का मूल कारण क्या है ? [1 अंक]

(A) मोटापे का शिकार होना

(B) अनियमित जीवन शैली होना

(C) भोजन में वसा और चीनी अधिक होना

(D) कसरत और योग का अभाव होना

सही उत्तर: (A) मोटापे का शिकार होना

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश आधारित उत्तर केवल दिए गए अंश के कथनों और उनके आपसी संबंध पर आधारित होना चाहिए।

- विकल्प चुनते समय मुख्य विचार, सीधे उल्लिखित तथ्य और कथन की सीमा को ध्यान में रखकर सभी विकल्प जाँचे जाते हैं।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक आधार पहचानें अंतिम अनुच्छेद में बढ़ते मोटापे के कारण हृदय रोग से लेकर मधुमेह तक कई समस्याएँ होने की बात सीधे कही गई है। दोनों रोगों से स्पष्ट रूप से जोड़ा गया कारण मोटापा है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (B) अनियमित जीवन शैली मोटापे की पृष्ठभूमि है, पर इन रोगों का सीधे उल्लिखित कारण मोटापा है। (C) अधिक वसा और चीनी तथा (D) कसरत और योग के अभाव का गद्यांश में उल्लेख नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष मोटापे का शिकार होना। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कारणों की श्रृंखला में रोग से सीधे जुड़े शब्द पहचानिए; यहाँ मोटापे से हृदय रोग और मधुमेह जुड़े हैं।

1(x). गद्यांश के अनुसार 'सोरायसिस' और 'एक्ज़िमा' रोग का संबंध शरीर के किस भाग से है ? [1 अंक]

(A) पेट

(B) मुँह

(C) दिल

(D) त्वचा

सही उत्तर: (D) त्वचा

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के मुख्य शब्द और संदर्भ के आधार पर उपयुक्त अर्थ की पहचान की जाती है।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रत्येक विकल्प को प्रश्न में माँगे गए आशय से मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: संदर्भ और अर्थ की पहचान गद्यांश में त्वचा के संक्रमण, मुँहासों तथा त्वचा को स्वस्थ रखने की चर्चा के तुरंत बाद सोरायसिस और एक्ज़िमा का उल्लेख किया गया है। यह प्रसंग दोनों रोगों का संबंध त्वचा से स्थापित करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण पेट, मुँह और दिल का उल्लेख इन रोगों के संदर्भ में नहीं है। अतः (A), (B) और (C) गद्यांश के संबद्ध अंश से समर्थित नहीं हैं। प्रश्न का उत्तर सामान्य जानकारी जोड़कर नहीं, त्वचा संबंधी वाक्यों को साथ पढ़कर निर्धारित करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर है : त्वचा अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: रोगों से पहले आए त्वचा और संक्रमण शब्दों को पहचानकर संबंधित अंग चुनें।

---

2. अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ?
उठी ऐसी घटा नभ में
छिपे सब चाँद और तारे,
उठा तूफान वह नभ में
गए बुझ दीप भी सारे,
मगर इस रात में भी लौ लगाए कौन बैठा है ?
अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ?
गगन में गर्व से उठ-उठ,
गगन में गर्व से घिर-घिर
गरज कहती घटाएँ हैं,
नहीं होगा उजाला फिर,
मगर चिर ज्योति में निष्ठा जमाए कौन बैठा है ?
अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ?
तिमिर के राज का ऐसा
कठिन आतंक छाया है,
उठा जो शीश सकते थे
उन्होंने सिर झुकाया है,
मगर विद्रोह की ज्वाला जलाए कौन बैठा है ?
अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ?
प्रलय का सब समाँ बाँधे
प्रलय की रात है छाई,
विनाशक शक्तियों की इस
तिमिर के बीच बन आई,
मगर निर्माण में आशा दृढ़ाए कौन बैठा है ?
अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ?
प्रभंजन, मेघ दामिनी ने
न क्या तोड़ा, न क्या फोड़ा,
धरा के और नभ के बीच
कुछ साबित नहीं छोड़ा,
मगर विश्वास को अपने बचाए कौन बैठा है ?
अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ? [5 अंक]

2(i). प्रस्तुत काव्यांश में 'दीपक' प्रतीकार्थ है : [1 अंक]

(A) ज्ञान

(B) ज्योति

(C) आशा

(D) शक्ति

सही उत्तर: (C) आशा

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के मुख्य शब्द और संदर्भ के आधार पर उपयुक्त अर्थ की पहचान की जाती है।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रत्येक विकल्प को प्रश्न में माँगे गए आशय से मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: संदर्भ और अर्थ की पहचान अँधेरी रात, तूफान और विनाश के बीच भी दीपक का जलते रहना उजाले की संभावना बचाए रखने का संकेत है। कवि ने इसी भाव को निर्माण में आशा और अपने विश्वास को बचाए रखने से जोड़ा है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण ज्ञान (A) का प्रसंग यहाँ प्रत्यक्ष नहीं है। ज्योति (B) दीपक का प्रकाश है, किंतु उसका प्रतीकार्थ नहीं। शक्ति (D) व्यापक गुण हो सकता है, पर कविता की निर्माण और विश्वास वाली पंक्तियाँ आशावादी भाव को स्पष्ट करती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष दीपक आशा का प्रतीक है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक का अर्थ चुनते समय पूरे काव्यांश में लौटने वाले निर्माण और विश्वास के भाव देखें।

2(ii). "उठी ऐसी घटा नभ में छिपे सब चाँद और तारे" – पंक्ति में 'चाँद और तारों का छिपना' से अभिप्राय है : [1 अंक]

(A) कोई मार्ग समझ में न आना

(B) विपरीत परिस्थितियों का घिर आना

(C) प्रकाश के साधनों का लुप्त हो जाना

(D) सहायक साधनों/व्यक्तियों का न होना

सही उत्तर: (D) सहायक साधनों/व्यक्तियों का न होना

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के मुख्य शब्द और संदर्भ के आधार पर उपयुक्त अर्थ की पहचान की जाती है।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रत्येक विकल्प को प्रश्न में माँगे गए आशय से मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: संदर्भ और अर्थ की पहचान चाँद और तारे अँधेरे में प्रकाश देकर सहारा देने वाले हैं। उनके छिप जाने का लाक्षणिक अर्थ ऐसे साधनों या व्यक्तियों का उपलब्ध न होना है, जिनसे संकट में सहायता और संबल मिलता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण कोई मार्ग समझ में न आना (A) व्यक्ति की मानसिक स्थिति है। विपरीत परिस्थितियों का घिर आना (B) घटा और तूफान के समग्र बिंब का भाव है। प्रकाश के साधनों का लुप्त होना (C) दृश्य का शाब्दिक अर्थ है; प्रश्न में विशेष रूप से चाँद-तारों के छिपने का अभिप्राय पूछा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष अभिप्राय है : सहायक साधनों/व्यक्तियों का न होना। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: घटा को विपत्ति और प्रकाश देने वाले चाँद-तारों को सहायता के प्रतीक मानकर अलग करें।

2(iii). "तिमिर के राज का ऐसा कठिन आतंक छाया है" – पंक्ति में 'तिमिर के राज' का आशय है : [1 अंक]

(A) अँधेरे का साम्राज्य

(B) प्राकृतिक आपदाएँ

(C) आततायी शासक

(D) सत्ताधारी वर्ग

सही उत्तर: (C) आततायी शासक

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के मुख्य शब्द और संदर्भ के आधार पर उपयुक्त अर्थ की पहचान की जाती है।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रत्येक विकल्प को प्रश्न में माँगे गए आशय से मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: संदर्भ और अर्थ की पहचान काव्यांश में तिमिर के राज के साथ कठिन आतंक, समर्थ लोगों का सिर झुकाना और विद्रोह की ज्वाला जैसे संकेत आए हैं। इनका संयुक्त भाव दमनकारी सत्ता का है। इसलिए यहाँ अँधेरे का शासन आततायी शासक का प्रतीक बनता है, जिसके विरोध में साहसी व्यक्ति अडिग रहता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण अँधेरे का साम्राज्य (A) पदबंध का शाब्दिक अर्थ है, जबकि प्रश्न उसका प्रसंगगत आशय पूछता है। प्राकृतिक आपदाएँ (B) तूफान आदि के बाहरी दृश्य से जुड़ी हैं, पर सिर झुकाने और विद्रोह के भाव की पूरी व्याख्या नहीं करतीं। सत्ताधारी वर्ग (D) सामान्य पद है; हर शासक आततायी नहीं होता। यहाँ आतंक का विशेष संकेत दमनकारी शासक की ओर है।

चरण 3: निष्कर्ष तिमिर के राज का प्रसंगगत आशय आततायी शासक है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: आशय पूछे जाने पर शब्दार्थ से आगे बढ़कर आतंक, सिर झुकाना और विद्रोह को एक साथ पढ़ें।

2(iv). विनाशक शक्तियाँ जब सक्रिय हो जाती हैं तब :

कथन I : चारों ओर आतंक का राज रहता है।

कथन II : भय का वातावरण रहता है।

कथन III : अमन-चैन का साम्राज्य रहता है।

उपर्युक्त कथन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है ? [1 अंक]

(A) केवल कथन I और II सही हैं।

(B) केवल कथन I और III सही हैं।

(C) केवल कथन II और III सही हैं।

(D) कथन I, II और III सही हैं।

सही उत्तर: (A) केवल कथन I और II सही हैं।

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के मुख्य शब्द और संदर्भ के आधार पर उपयुक्त अर्थ की पहचान की जाती है।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रत्येक विकल्प को प्रश्न में माँगे गए आशय से मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: संदर्भ और अर्थ की पहचान काव्यांश में कठिन आतंक छाने, सिर झुका देने और प्रलय की रात आने का चित्र है। इन संकेतों से स्पष्ट होता है कि विनाशक शक्तियों के सक्रिय होने पर आतंक का प्रभुत्व और भय का वातावरण बनता है। अतः कथन I तथा II समर्थित हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण कथन III अमन-चैन का साम्राज्य बताता है, जो आतंक और विनाश की स्थिति के विपरीत है।

इसलिए कथन III असत्य है। विकल्प (B), (C) तथा (D) में यही असत्य कथन शामिल होने से वे सही संयोजन नहीं बनाते हैं। सभी कथनों को स्वतंत्र रूप से जाँचना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर है : केवल कथन I और II सही हैं। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: आतंक और सिर झुकाने के संकेतों से भय पहचानें और अमन-चैन वाले कथन को हटाएँ।

2(v). स्तंभ-I को स्तंभ-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

	स्तंभ-I		स्तंभ-II
1.	तिमिर	(i)	बिजली
2.	समाँ	(ii)	धरती
3.	दामिनी	(iii)	दृश्य
4.	धरा	(iv)	अँधेरा

विकल्प : [1 अंक]

(A) 1-(ii), 2-(iii), 3-(iv), 4-(i)

(B) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii), 4-(iv)

(C) 1-(i), 2-(ii), 3-(iv), 4-(iii)

(D) 1-(iv), 2-(iii), 3-(i), 4-(ii)

सही उत्तर: (D) 1-(iv), 2-(iii), 3-(i), 4-(ii)

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के मुख्य शब्द और संदर्भ के आधार पर उपयुक्त अर्थ की पहचान की जाती है।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रत्येक विकल्प को प्रश्न में माँगे गए आशय से मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: संदर्भ और अर्थ की पहचान तिमिर का अर्थ अँधेरा है, अतः 1 का मेल (iv) से होगा। समाँ का अर्थ यहाँ दृश्य या वातावरण है, अतः 2 का मेल (iii) से होगा। दामिनी बिजली को कहते हैं, इसलिए 3 का मेल (i) से है। धरा अर्थात धरती के लिए 4 का मेल (ii) से होगा।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण विकल्प (A) तिमिर को धरती और दामिनी को अँधेरा बताता है। विकल्प (B) तिमिर को दृश्य और समाँ को बिजली बताता है। विकल्प (C) तिमिर को बिजली तथा धरा को दृश्य बताता है। ये शब्दार्थ गलत हैं; केवल एक मेल देखकर चुनाव करने के बजाय चारों जोड़ियों का क्रम मिलाना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर है : 1-(iv), 2-(iii), 3-(i), 4-(ii) अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले दामिनी-बिजली तथा धरा-धरती की निश्चित जोड़ियाँ बनाएँ, फिर शेष दो मिलाएँ।

3(i). मुद्रित माध्यमों में लोकप्रिय लेखकों के लेखों की नियमित शृंखला कही जाती है : [1 अंक]

(A) स्तंभ लेखन

(B) समाचार लेखन

(C) सूचना लेखन

(D) सृजनात्मक लेखन

सही उत्तर: (A) स्तंभ लेखन

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के मुख्य शब्द और संदर्भ के आधार पर उपयुक्त अर्थ की पहचान की जाती है।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रत्येक विकल्प को प्रश्न में माँगे गए आशय से मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: संदर्भ और अर्थ की पहचान समाचार-पत्र या पत्रिका में किसी लोकप्रिय लेखक के लेख जब किसी निश्चित स्थान या शीर्षक के अंतर्गत नियमित रूप से प्रकाशित होते हैं, तो उस शृंखला को स्तंभ लेखन कहा जाता है। नियमितता और लेखक का अपना विशिष्ट दृष्टिकोण इसकी पहचान हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण समाचार लेखन (B) का मुख्य उद्देश्य घटनाओं की सूचना देना है। सूचना लेखन (C) किसी आवश्यक जानकारी की प्रस्तुति है। सृजनात्मक लेखन (D) कल्पना और मौलिक अभिव्यक्ति का व्यापक क्षेत्र है। इनमें से कोई पद लोकप्रिय लेखकों की नियमित लेख-शृंखला का उतना सटीक नाम नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष नियमित लेख-शृंखला स्तंभ लेखन कहलाती है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में नियमित शृंखला शब्द दिखे तो स्तंभ की निश्चित और आवर्ती प्रकृति याद करें।

3(ii). आर्थिक पत्रकारिता से जुड़े पत्रकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती है : [1 अंक]

(A) इस क्षेत्र से जुड़ी तकनीकी शब्दावली को समझना

(B) इस क्षेत्र से जुड़ी तकनीकी शब्दावली का प्रयोग करना

(C) देश की अर्थव्यवस्था का ठीक से विश्लेषण करना

(D) इस क्षेत्र से जुड़ी शब्दावली को पाठक वर्ग के समझने लायक बनाना

सही उत्तर: (D) इस क्षेत्र से जुड़ी शब्दावली को पाठक वर्ग के समझने लायक बनाना

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के मुख्य शब्द और संदर्भ के आधार पर उपयुक्त अर्थ की पहचान की जाती है।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रत्येक विकल्प को प्रश्न में माँगे गए आशय से मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: संदर्भ और अर्थ की पहचान आर्थिक पत्रकारिता में अनेक तकनीकी शब्द और जटिल अवधारणाएँ आती हैं। पत्रकार की जिम्मेदारी इन्हें ऐसी सरल भाषा में प्रस्तुत करना है कि सामान्य पाठक भी आर्थिक घटना और उसके प्रभाव को समझ सके। संप्रेषण की यही आवश्यकता सबसे बड़ी चुनौती बनती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण तकनीकी शब्दावली को समझना (A) पत्रकार की तैयारी है। उसका प्रयोग करना (B) अपने-आप में पाठक तक अर्थ पहुँचने की गारंटी नहीं है। अर्थव्यवस्था का विश्लेषण (C) महत्त्वपूर्ण कार्य है, पर प्रश्न विशेषज्ञ जानकारी को सामान्य पाठक तक पहुँचाने की विशेष कठिनाई की ओर संकेत करता है।

चरण 3: निष्कर्ष आवश्यक कार्य है : इस क्षेत्र से जुड़ी शब्दावली को पाठक वर्ग के समझने लायक बनाना अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पत्रकार क्या जानता है के साथ यह भी देखें कि वह पाठक को कितनी स्पष्टता से समझाता है।

3(iii). पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं ? [1 अंक]

(A) एक

(B) दो

(C) तीन

(D) चार

सही उत्तर: (C) तीन

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों का वर्गीकरण उनके कार्य और नियुक्ति की प्रकृति के आधार पर किया जाता है।
- सही उत्तर चुनने के लिए अर्थ और प्रसंग दोनों का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: मुख्य आशय की पहचान पत्रकारों के प्रमुख प्रकार पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र पत्रकार हैं। पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार संस्था के नियमित कर्मचारी होते हैं। अंशकालिक पत्रकार सीमित क्षेत्र या अवधि के लिए समाचार देते हैं। स्वतंत्र पत्रकार किसी एक संस्था की स्थायी नौकरी से बँधे बिना अलग-अलग प्रकाशनों के लिए लिखते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (A) एक तथा (B) दो में इन तीनों श्रेणियों का समावेश नहीं होता। विकल्प (D) चार भी पाठ्यपुस्तक के इस वर्गीकरण से मेल नहीं खाता। इसलिए नियुक्ति और कार्य-संबंध की दृष्टि से तीन प्रकार गिने जाएँगे।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर विकल्प (C) तीन है।

त्वरित सुझाव: पत्रकारों के प्रकार याद करने के लिए पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र को साथ याद करें।

3(iv). पत्रकारिता का मूल तत्त्व है : [1 अंक]

(A) सूचना देना

(B) प्रेरणा देना

(C) ख़बर छापना

(D) मनोरंजन करना

सही उत्तर: (A) सूचना देना

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता समाज तक जनहित की प्रासंगिक और सत्यापित जानकारी पहुँचाने का कार्य करती है।
- सही उत्तर चुनने के लिए अर्थ और प्रसंग दोनों का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: मुख्य आशय की पहचान पत्रकारिता का मूल प्रयोजन पाठक या दर्शक को उसके आसपास तथा व्यापक समाज में हो रही घटनाओं से अवगत कराना है। इसीलिए सूचना देना उसका आधारभूत तत्त्व है। सूचना मिलने पर नागरिक घटनाओं को समझते हैं और अपने विचार तथा निर्णय बना सकते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (B) प्रेरणा देना और (D) मनोरंजन करना कुछ सामग्री के प्रभाव हो सकते हैं, किंतु वे पत्रकारिता का मूल तत्त्व नहीं हैं। विकल्प (C) खबर छापना सूचना पहुँचाने का एक तरीका है; रेडियो और टेलीविजन में खबर छापी नहीं जाती, फिर भी पत्रकारिता होती है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर विकल्प (A) सूचना देना है।

त्वरित सुझाव: मूल तत्त्व और माध्यम में अंतर करें: सूचना उद्देश्य है, जबकि खबर छापना केवल एक तरीका है।

3(v). संचार प्रक्रिया में किसी प्रकार की बाधा कहलाती है : [1 अंक]

(A) बाधा

(B) शोर

(C) अवरोध

(D) रुकावट

सही उत्तर: (B) शोर

हल:

अवधारणा:

- संचार में संदेश के संप्रेषण या सही अर्थ ग्रहण करने में बाधा डालने वाला तत्त्व शोर कहलाता है।
- सही उत्तर चुनने के लिए अर्थ और प्रसंग दोनों का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: मुख्य आशय की पहचान प्रेषक से प्राप्तकर्ता तक संदेश स्पष्ट रूप में पहुँचना संचार की आवश्यक शर्त है। बीच में कोई व्यवधान संदेश को अस्पष्ट, अधूरा या विकृत कर दे तो संचार प्रक्रिया प्रभावित होती है। संचारशास्त्र में ऐसे व्यवधान के लिए शोर पारिभाषिक शब्द है। यह केवल ऊँची आवाज तक सीमित नहीं होता।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (A) बाधा, (C) अवरोध और (D) रुकावट सामान्य भाषा में व्यवधान के पर्याय हैं। प्रश्न संचार प्रक्रिया के निश्चित पारिभाषिक नाम की पहचान कराता है। इसलिए सामान्य पर्यायों की जगह विकल्प (B) शोर उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर विकल्प (B) शोर है।

त्वरित सुझाव: संचार की बाधा पूछे जाने पर पारिभाषिक शब्द शोर चुनें, केवल सामान्य पर्याय नहीं।

---

4. मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ !
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ ! [5 अंक]

4(i). 'जग-जीवन का भार' से क्या आशय है ? [1 अंक]

(A) व्यक्तिगत जीवन की कठिनाइयाँ

(B) सांसारिक जीवन की समस्याएँ

(C) व्यावहारिक जीवन का संघर्ष

(D) आम जीवन की जद्दोजहद

सही उत्तर: (B) सांसारिक जीवन की समस्याएँ

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में कवि सांसारिक दायित्वों और अपने अंतर्मन के प्रेम का संबंध व्यक्त करता है।
- सही उत्तर चुनने के लिए अर्थ और प्रसंग दोनों का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: मुख्य आशय की पहचान 'जग-जीवन' में जग शब्द संसार का बोध कराता है और भार उसके दायित्वों तथा कठिनाइयों का। कवि कहता है कि वह इन समस्याओं को ढोते हुए भी अपने भीतर प्यार बनाए रखता है। अगली पंक्ति में 'फिर भी' का प्रयोग कठिन संसार और प्रेमपूर्ण मन के इसी संबंध को स्पष्ट करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (A) अर्थ को केवल व्यक्तिगत कठिनाइयों तक सीमित करता है। विकल्प (C) व्यावहारिक संघर्ष तथा (D) आम जीवन की जद्दोजहद निकट अर्थ देते हैं, लेकिन जग-जीवन के व्यापक सांसारिक आशय को विकल्प (B) सबसे स्पष्ट रूप में व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर विकल्प (B) सांसारिक जीवन की समस्याएँ है।

त्वरित सुझाव: समास के दोनों शब्दों का अर्थ जोड़ें: जग-जीवन संसार का जीवन है और भार उसकी समस्याएँ।

4(ii). कवि सांसारिक प्रेम का आधार किसे मानता है ? [1 अंक]

(A) त्याग

(B) स्वार्थ

(C) सहयोग

(D) प्रशंसा

सही उत्तर: (B) स्वार्थ

हल:

अवधारणा:

- कवि अपनी अंतर्मुखी प्रेमभावना के सामने संसार की उपयोगितावादी पसंद रखता है।
- सही उत्तर चुनने के लिए अर्थ और प्रसंग दोनों का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: मुख्य आशय की पहचान 'जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते' से पता चलता है कि संसार उन्हीं को महत्त्व देता है जो उसकी पसंद के अनुरूप गाते हैं। इस व्यवहार में अपने हित और अपनी प्रशंसा की अपेक्षा छिपी है। इसके विपरीत कवि अपने मन का गान करता है, इसलिए उसका प्रेम सांसारिक स्वार्थ से अलग है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (A) त्याग और (C) सहयोग निःस्वार्थ संबंधों के सकारात्मक आधार हैं, पर उद्धृत पंक्ति संसार की उस प्रवृत्ति को नहीं दिखाती। विकल्प (D) प्रशंसा उसी स्वार्थपूर्ण प्रवृत्ति का एक रूप है; व्यापक आधार स्वार्थ है। इसलिए विकल्प (B) सर्वाधिक उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर विकल्प (B) स्वार्थ है।

त्वरित सुझाव: जग उन्हीं को पूछता है जो जग की गाते हैं: इस शर्त में छिपे अपने हित को पहचानें।

4(iii). 'साँसों के तार' से कवि का क्या तात्पर्य है ? [1 अंक]

(A) प्रेम

(B) संवेदना

(C) चाहत

(D) समर्पण

सही उत्तर: (B) संवेदना

हल:

अवधारणा:

- कविता में संगीत से संबंधित शब्दों के द्वारा मन की अनुभूतियों को मूर्त रूप दिया गया है।
- सही उत्तर चुनने के लिए अर्थ और प्रसंग दोनों का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: मुख्य आशय की पहचान कवि कहता है कि किसी के छूने से उसके साँसों के दो तार झंकृत हो उठे। जैसे वाद्य के तार स्पर्श से बजते हैं, वैसे ही प्रिय के स्पर्श ने उसके भीतर की संवेदनाओं को जगा दिया। साँसें जीवन का और तार मन के सूक्ष्म भावों का बिंब बनते हैं। अतः यहाँ मुख्य आशय संवेदना है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (A) प्रेम प्रसंग की पृष्ठभूमि है, पर तार के माध्यम से व्यक्त भीतरी स्पंदन का सबसे सटीक नाम संवेदना है। विकल्प (C) चाहत इच्छा को और (D) समर्पण स्वयं को अर्पित करने को बताते हैं; झंकृत होने की भावगत स्थिति को ये उतनी स्पष्टता से नहीं बताते।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर विकल्प (B) संवेदना है।

त्वरित सुझाव: झंकृत तारों के बिंब में हृदय के स्पंदन देखें; इससे संवेदना का आशय तुरंत स्पष्ट होता है।

4(iv). प्रस्तुत काव्यांश से कवि के बारे में पता चलता है कि :

कथन I : कवि संवेदनशील है।

कथन II : प्रेम ही कवि के लिए प्रमुख है।

कथन III : प्रेम के सामने संसार का महत्त्व नहीं है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) कथन I और III सही हैं।

(B) कथन I ग़लत है और कथन II, III सही हैं।

(C) कथन I, II और III सही हैं।

(D) कथन I और II सही हैं।

सही उत्तर: (C) कथन I, II और III सही हैं।

हल:

अवधारणा:

- बहुकथनीय प्रश्न में प्रत्येक कथन को काव्यांश की संबंधित पंक्ति से अलग-अलग जाँचना चाहिए।
- सही उत्तर चुनने के लिए अर्थ और प्रसंग दोनों का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: मुख्य आशय की पहचान कथन I सही है: किसी के स्पर्श से साँसों के तार झंकृत होना कवि की संवेदनशीलता दिखाता है। कथन II भी सही है: जीवन का भार होते हुए भी प्यार लिए फिरना और स्नेह-सुरा का पान करना उसके लिए प्रेम की प्रमुखता बताता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच कथन III को 'मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ' और 'मैं अपने मन का गान किया करता हूँ' समर्थन देते हैं। प्रेमपूर्ण अंतर्मन के आगे लोकमत गौण है। विकल्प (A) कथन II और (D) कथन III को छोड़ते हैं, जबकि (B) कथन I

को गलत बताता है। तीनों सही होने से ये तीनों विकल्प अधूरे या गलत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर विकल्प (C) कथन I, II और III सही हैं। है।

त्वरित सुझाव: हर कथन के लिए कविता की एक पंक्ति खोजें; तीनों का समर्थन मिले तो सभी कथनों वाला विकल्प लें।

4(v). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : संसार से निरपेक्ष रहने वाला कवि जग-जीवन का भार लिए फिरता है।

कारण : दुनिया अपने व्यंग्य बाणों से और शासन-प्रशासन से चाहे कितना कष्ट दे, पर दुनिया से कटकर मनुष्य रह भी नहीं पाता।

विकल्प : [1 अंक]

(A) कथन सही है, किंतु कारण ग़लत है।

(B) कथन ग़लत है, किंतु कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या **नहीं** करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता अलग-अलग जाँचकर उनके बीच व्याख्यात्मक संबंध देखना चाहिए।
- कवि की अंतर्मुखी स्वतंत्रता और संसार में रहने की अनिवार्यता एक साथ उपस्थित हैं।

चरण 1: कथन की जाँच कथन सही है। कवि 'मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ' कहकर लोकमत से अपनी निरपेक्षता प्रकट करता है। फिर भी 'मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ' कहकर सांसारिक जीवन के दायित्वों और कष्टों को स्वीकार करता है। दोनों स्थितियाँ कविता में साथ आती हैं।

चरण 2: कारण की जाँच कारण भी सही है। संसार के ताने, विरोध और व्यवस्थागत कष्ट मनुष्य को पीड़ा पहुँचा सकते हैं, पर मनुष्य समाज में रहता है और उसके दायित्वों से पूरी तरह अलग नहीं हो सकता। इसलिए मानसिक रूप से जग की परवाह न करना सांसारिक जीवन से वास्तविक संबंध टूट जाना नहीं है।

चरण 3: कारण और कथन का संबंध कारण स्पष्ट करता है कि कवि संसार के मत से निरपेक्ष होकर भी उसका भार क्यों उठाता है: संसार से पूर्णतः कटकर रहना संभव नहीं है। अतः यह कथन की सही व्याख्या है। विकल्प (A) कारण को गलत, (B) कथन को गलत और (C) व्याख्यात्मक संबंध को अस्वीकार करता है; इसलिए ये उपयुक्त नहीं हैं।

चरण 4: निष्कर्ष अतः सही उत्तर विकल्प (D) है: कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

त्वरित सुझाव: निरपेक्षता को समाज से पूर्ण अलगाव न मानें; यही अंतर कारण और कथन का संबंध स्पष्ट करता है।

---

5. एक-एक बार मुझे मालूम होता है कि यह शिरीष एक अद्भुत अवधूत है। दुःख हो या सुख, वह हार नहीं मानता। न ऊधो का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी यह हज़रत न जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते हैं। एक वनस्पतिशास्त्री ने मुझे बताया है कि यह उस श्रेणी का पेड़ है, जो वायुमंडल से अपना रस खींचता है। ज़रूर खींचता होगा। नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल तंतुजाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे उगा सकता था ? अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर बहुत-कुछ इस शिरीष के समान ही थे, मस्त और बेपरवा, पर सरस और मादक। [5 अंक]

5(i). गद्यांश का केन्द्रीय भाव है : [1 अंक]

(A) कबीर का परिचय

(B) शिरीष की विशेषता

(C) शिरीष की उपयोगिता

(D) शिरीष का प्रभाव

सही उत्तर: (B) शिरीष की विशेषता

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश का केंद्रीय भाव वह विचार है जो पूरे अनुच्छेद को जोड़ता है।
- उत्तर के चयन में दिए गए प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और निर्णायक आधार यहाँ शिरीष को अद्भुत अवधूत बताया गया है। उसका सुख-दुःख में अडिग रहना, भयंकर लू में कोमल फूल उगाना और मस्त रहना उसकी विशेषताओं के रूप में वर्णित है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में कबीर का परिचय है, जबकि कबीर का उल्लेख केवल तुलना के लिए हुआ है। (C) की उपयोगिता और (D) के प्रभाव का व्यवस्थित विवेचन नहीं है। पूरे वर्णन का केंद्र शिरीष का स्वभाव है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) है: शिरीष की विशेषता

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव चुनते समय अंतिम उदाहरण से अधिक पूरे गद्यांश के मुख्य विषय को महत्त्व दें।

5(ii). शिरीष को अद्भुत कहा गया है : [1 अंक]

(A) हँसते मुस्कुराते रहने के कारण

(B) कठिनाइयों में अडिग रहने के कारण

(C) दुःख-सुख में सम भाव से रहने के कारण

(D) भयंकर गरमी को झेलने के कारण

सही उत्तर: (C) दुःख-सुख में सम भाव से रहने के कारण

हल:

अवधारणा:

- अवधूत का स्वभाव परिस्थितियों से ऊपर उठकर सहज और निर्लिप्त बने रहना है।
- उत्तर के चयन में दिए गए प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और निर्णायक आधार लेखक कहता है कि दुःख हो या सुख, शिरीष हार नहीं मानता और मौज में मस्त रहता है। दोनों विपरीत अवस्थाओं में उसकी सहजता बनी रहती है। इस समभाव में उसका अवधूत जैसा अद्भुत रूप प्रकट होता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) केवल प्रसन्न रहने और (D) केवल गरमी सहने तक सीमित हैं। (B) कठिनाई में दृढ़ता की एक विशेषता बताता है, पर सुख और दुःख दोनों में एक समान रहने का व्यापक भाव (C) में व्यक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है: दुःख-सुख में सम भाव से रहने के कारण

त्वरित सुझाव: ऐसे विकल्पों में उस उत्तर को चुनें जो उद्धृत वाक्य की दोनों विपरीत स्थितियों को समेटता हो।

5(iii). निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए गद्यांश के अनुसार सही कथन को चयनित कर लिखिए। [1 अंक]

(A) शिरीष वायुमंडल से भोग्य पदार्थ ग्रहण करता है।

(B) शिरीष एक हरा-भरा पौधा है।

(C) शिरीष पाताल की गहराइयों से रस प्राप्त करता है।

(D) शिरीष वनस्पतिशास्त्री का प्रिय पौधा है।

सही उत्तर: (A) शिरीष वायुमंडल से भोग्य पदार्थ ग्रहण करता है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के अनुसार सही कथन चुनते समय स्पष्ट रूप से दिए गए तथ्य को आधार बनाना चाहिए।
- उत्तर के चयन में दिए गए प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और निर्णायक आधार वनस्पतिशास्त्री के कथन में बताया गया है कि शिरीष उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमंडल से अपना रस खींचता है। विकल्प (A) में इसी तथ्य को पोषण ग्रहण करने के आशय में व्यक्त किया गया है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (B) में हरा-भरा पौधा होने की सामान्य बात है, जो यहाँ बताए गए विशिष्ट तथ्य का उत्तर नहीं है। (C) में पाताल से रस लेने की बात गद्यांश के विपरीत है। (D) में वनस्पतिशास्त्री की पसंद के बारे में अप्रमाणित बात कही गई है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (A) है: शिरीष वायुमंडल से भोग्य पदार्थ ग्रहण करता है।

त्वरित सुझाव: तथ्यपरक प्रश्न में पाठ की स्पष्ट सूचना से विकल्प का अर्थ मिलाएँ, बाहरी जानकारी न जोड़ें।

5(iv). "न ऊधो का लेना, न माधो का देना" – का आशय है : [1 अंक]

(A) सदैव प्रसन्न रहना

(B) क्रय-विक्रय न करना

(C) लेन-देन का कार्य न करना

(D) निर्लिप्त भाव से जीवन जीना

सही उत्तर: (D) निर्लिप्त भाव से जीवन जीना

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का अर्थ उसके प्रसंग से समझा जाता है, अलग-अलग शब्दों के सीधे अर्थ से नहीं।
- उत्तर के चयन में दिए गए प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और निर्णायक आधार शिरीष को अवधूत, मस्त और बेपरवा कहा गया है। इसी संदर्भ में न ऊधो का लेना, न माधो का देना उसके स्वार्थ, मोह और सांसारिक उलझनों से दूर रहने का भाव व्यक्त करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) प्रसन्नता बताता है, पर निर्लिप्तता का पूरा आशय नहीं बताता। (B) में क्रय-विक्रय और (C) में लेन-देन को शाब्दिक रूप में लिया गया है। यहाँ व्यापार का विषय नहीं है; इसलिए (D) प्रसंगानुकूल है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है: निर्लिप्त भाव से जीवन जीना

त्वरित सुझाव: मुहावरे का उत्तर चुनते समय आसपास के अवधूत, मस्त और बेपरवा जैसे संकेत-शब्द पढ़ें।

5(v). "मौज में आठों याम मस्त रहते हैं" – पंक्ति में प्रयुक्त 'याम' शब्द से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

(A) मिनट

(B) घंटा

(C) दिन

(D) पहर

सही उत्तर: (D) पहर

हल:

अवधारणा:

- शब्दार्थ के प्रश्न में परंपरागत अर्थ और वाक्य में उसका प्रयोग दोनों देखना चाहिए।
- उत्तर के चयन में दिए गए प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और निर्णायक आधार याम का अर्थ पहर होता है। दिन और रात को मिलाकर आठ पहर माने जाते हैं। इसीलिए आठों याम का आशय पूरे दिन-रात या हर समय है; शिरीष हर समय मस्त रहता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) मिनट और (B) घंटा समय की दूसरी इकाइयाँ हैं, याम के अर्थ नहीं। (C) दिन भी याम का सीधा अर्थ नहीं है। आठों याम के परंपरागत प्रयोग को सही रूप से केवल (D) पहर स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है: पहर

त्वरित सुझाव: आठों याम को आठों पहर से जोड़कर याद करें; इससे शब्दार्थ और पंक्ति का भाव साथ स्पष्ट होंगे।

6(i). घर में दावत चलते समय यशोधर बाबू संध्या करने क्यों चले गए ? [1 अंक]

(A) प्रभु का आशीर्वाद लेने के लिए

(B) शोर-शराबे से बचने के लिए

(C) प्रभु का धन्यवाद व्यक्त करने के लिए

(D) पार्टी से बचने के लिए

सही उत्तर: (D) पार्टी से बचने के लिए

हल:

अवधारणा:

- सिल्वर वैडिंग में यशोधर बाबू की परंपरागत सोच और परिवार की नई जीवनशैली के बीच दूरी दिखाई गई है।
- उत्तर के चयन में दिए गए प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और निर्णायक आधार विवाह की वर्षगाँठ पर घर में आयोजित पार्टी की आधुनिक रीति यशोधर बाबू को सहज नहीं लगती। वे उस आयोजन में घुल-मिल नहीं पाते। संध्या करने के लिए अलग चले जाना पार्टी से दूर रहने का अवसर बनता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) आशीर्वाद लेना और (C) धन्यवाद देना इस प्रसंग में उनके अलग जाने का मुख्य कारण नहीं हैं। (B) शोर से बचना केवल बाहरी असुविधा बताता है; कहानी में उनके मन का संकोच पूरे पार्टी-आयोजन से जुड़ा है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है: पार्टी से बचने के लिए

त्वरित सुझाव: पात्र के किसी कार्य का कारण चुनते समय कहानी में उसकी मानसिक स्थिति और पूरे प्रसंग को जोड़ें।

6(ii). सिन्धु का इलाका किससे मिलता-जुलता है ? [1 अंक]

(A) बाड़मेर से

(B) राजस्थान से

(C) जैसलमेर से

(D) बीकानेर से

सही उत्तर: (B) राजस्थान से

हल:

अवधारणा:

- अतीत में दबे पाँव में लेखक सिंधु क्षेत्र के परिवेश को परिचित भारतीय भूभाग से जोड़कर समझाता है।
- उत्तर के चयन में दिए गए प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और निर्णायक आधार पाठ में सिंधु के इलाके की तुलना राजस्थान से की गई है। इस क्षेत्र के भू-दृश्य और परिवेश का साम्य उस तुलना का आधार है। इसलिए पूछा गया व्यापक भौगोलिक नाम राजस्थान है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) बाड़मेर, (C) जैसलमेर और (D) बीकानेर राजस्थान के विशिष्ट स्थान हैं। वे इस प्रश्न में पाठ के अनुसार प्रयुक्त व्यापक तुलना का स्थान नहीं ले सकते। पाठगत उल्लेख के अनुरूप (B) राजस्थान सही है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) है: राजस्थान से

त्वरित सुझाव: स्थान-संबंधी प्रश्न में पाठ में आए व्यापक प्रदेश और उसके भीतर के किसी एक नगर का अंतर पहचानें।

6(iii). बसंत पाटील को लेखक द्वारा मित्र बनाए जाने का कारण नहीं है : [1 अंक]

(A) वह मेधावी था

(B) उसका शांत स्वभाव था

(C) वह कक्षा का मॉनिटर था

(D) वह बड़ी जाति से था

सही उत्तर: (D) वह बड़ी जाति से था

हल:

अवधारणा:

- जूझ में लेखक की शिक्षा की आकांक्षा और सहपाठियों से मिले सहयोग का चित्रण है। यहाँ कारण नहीं है पूछा गया है।
- उत्तर के चयन में दिए गए प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और निर्णायक आधार बसंत पाटील पढ़ाई में अच्छा और शांत स्वभाव का छात्र था। वह कक्षा का मॉनिटर भी था। लेखक उसके पास बैठकर पढ़ाई की कमियाँ दूर करना चाहता था और दोनों की मित्रता विकसित हुई।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) मेधावी होना, (B) शांत स्वभाव और (C) मॉनिटर होना उसके व्यक्तित्व तथा शैक्षिक सहयोग से जुड़े तथ्य हैं। (D) बड़ी जाति से होने को मित्रता का आधार नहीं बताया गया है, इसलिए नकारात्मक प्रश्न का उत्तर यही है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है: वह बड़ी जाति से था

त्वरित सुझाव: कारण नहीं है जैसे प्रश्न में पहले नकार को रेखांकित करें, फिर पाठ से असमर्थित विकल्प चुनें।

6(iv). कुंड में पानी के प्रबंध हेतु किसकी व्यवस्था थी ? [1 अंक]

(A) नहर की

(B) तालाब की

(C) कुएँ की

(D) नदियों की

सही उत्तर: (C) कुएँ की

हल:

अवधारणा:

- कुंड की जलव्यवस्था।
- उत्तर के लिए पाठ में वर्णित प्रसंग और दिए गए विकल्पों का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग की पहचान मोहनजोदड़ो के विशाल स्नानागार के कुंड में पानी भरने के लिए कुएँ की व्यवस्था थी। कुंड और उसके पास बना कुआँ जलापूर्ति की सुविचारित प्रणाली को स्पष्ट करते हैं।

चरण 2: निर्णायक तथ्य कुएँ से मिलने वाला पानी कुंड की आवश्यकता पूरी करता था। प्रश्न जल निकालने की नाली के बारे में नहीं, बल्कि पानी के प्रबंध के बारे में है। इसलिए आपूर्ति के साधन को पहचानना आवश्यक है।

चरण 3: अन्य विकल्पों का परीक्षण नहर, तालाब और नदियाँ इस कुंड के लिए वर्णित जलापूर्ति के साधन नहीं हैं। ये सामान्य जलस्रोत हो सकते हैं, पर पाठ में कुंड से संबंधित व्यवस्था कुएँ की ही है।

चरण 4: निष्कर्ष कुंड में पानी के प्रबंध हेतु कुएँ की व्यवस्था थी। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: स्नानागार की जलापूर्ति को कुएँ से और गंदे पानी की निकासी को नालियों से जोड़कर याद रखें।

6(ix). मूल संस्कारों से आधुनिका न होते हुए यशोधर बाबू की पत्नी के आधुनिका बनने का कारण इनमें से नहीं है : [1 अंक]

(A) बच्चों का पढ़-लिखकर ऊँचा वेतनमान पाना

(B) संयुक्त परिवार में पति द्वारा कभी पक्ष न लिया जाना

(C) बच्चों की तरफदारी करने की मातृसुलभ मजबूरी

(D) संयुक्त परिवार में आचार-व्यवहार के बंधनों में रहना

सही उत्तर: (A) बच्चों का पढ़-लिखकर ऊँचा वेतनमान पाना

हल:

अवधारणा:

- नकारात्मक प्रश्न में कारण की पहचान।
- उत्तर के लिए पाठ में वर्णित प्रसंग और दिए गए विकल्पों का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग की पहचान यशोधर बाबू की पत्नी मूल संस्कारों से परंपरागत थीं। उनके आधुनिक व्यवहार को समझने के लिए परिवार में उनके अनुभवों तथा बच्चों के प्रति उनके लगाव को देखना आवश्यक है।

चरण 2: निर्णायक तथ्य संयुक्त परिवार में आचार-व्यवहार के बंधनों में रहना और पति द्वारा उनका पक्ष न लिया जाना उनकी मन:स्थिति की पृष्ठभूमि हैं। बच्चों की तरफदारी करने की मातृसुलभ मजबूरी भी उनके आधुनिक बनने के प्रयास का कारण है।

चरण 3: अन्य विकल्पों का परीक्षण इस प्रकार (B), (C) और (D) पाठ में उनके व्यवहार को समझाने वाले कारण हैं। बच्चों का पढ़-लिखकर ऊँचा वेतनमान पाना इस परिवर्तन का बताया गया कारण नहीं है। प्रश्न में इसी असंबद्ध कारण को चुनना है।

चरण 4: निष्कर्ष आधुनिका बनने का कारण नहीं है—बच्चों का पढ़-लिखकर ऊँचा वेतनमान पाना। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के 'नहीं है' पर ध्यान दें; पत्नी के पारिवारिक अनुभव और मातृभाव से अलग विकल्प चुनें।

6(v). दफ़्तर से निकलकर यशोधर बाबू कहाँ चले जाते थे ? [1 अंक]

(A) क्वार्टर में

(B) बिरला मंदिर में

(C) गोल मार्केट में

(D) पार्क में

सही उत्तर: (B) बिरला मंदिर में

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू की दिनचर्या।
- उत्तर के लिए पाठ में वर्णित प्रसंग और दिए गए विकल्पों का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग की पहचान यशोधर बाबू के धार्मिक संस्कार और उनकी नियमित दिनचर्या उनके व्यक्तित्व के महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं। दफ़्तर से निकलने के बाद वे सीधे घर लौटने के स्थान पर बिरला मंदिर चले जाते थे।

चरण 2: निर्णायक तथ्य प्रश्न दफ़्तर के बाद उनके निश्चित गंतव्य की पहचान पूछता है। बिरला मंदिर जाने की आदत को उनके परंपरागत जीवन-दृष्टिकोण से जोड़ने पर प्रसंग स्पष्ट हो जाता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों का परीक्षण क्वार्टर उनका निवास है, पर यहाँ पूछे गए गंतव्य का उत्तर नहीं। गोल मार्केट और पार्क भी इस विशेष दिनचर्या का सही स्थान नहीं हैं। इसलिए निवास या सामान्य घूमने के स्थान को चुनना गलत होगा।

चरण 4: निष्कर्ष दफ़्तर से निकलकर यशोधर बाबू बिरला मंदिर चले जाते थे। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: दफ़्तर के बाद यशोधर बाबू की धार्मिक दिनचर्या याद करें; इसी से बिरला मंदिर वाला विकल्प मिलता है।

6(vi). 'जूझ' कहानी का नायक आनंदा कक्षा में चव्हाण के लड़के द्वारा गमछा छीने जाने पर रुआँसा क्यों हो गया ? [1 अंक]

(A) गमछे के फट जाने के कारण

(B) कक्षा के छात्रों के हँसने के कारण

(C) गमछा फट जाने के संभावित भय के कारण

(D) पिता द्वारा की जाने वाली संभावित पिटाई के कारण

सही उत्तर: (C) गमछा फट जाने के संभावित भय के कारण

हल:

अवधारणा:

- आनंदा की तत्काल प्रतिक्रिया।
- उत्तर के लिए पाठ में वर्णित प्रसंग और दिए गए विकल्पों का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग की पहचान आनंदा का गमछा उसकी ग्रामीण वेशभूषा का हिस्सा था। कक्षा में चव्हाण के लड़के के उसे छीन लेने पर आनंदा को उसकी सुरक्षा की चिंता हुई और वह रुआँसा हो गया।

चरण 2: निर्णायक तथ्य उसे आशंका थी कि इस छीना-झपटी में गमछा फट जाएगा। प्रश्न उसकी तत्काल भावनात्मक प्रतिक्रिया का कारण पूछता है, इसलिए वस्तु के फटने की आशंका निर्णायक है। गमछा वास्तव में फट जाने का उल्लेख उत्तर का आधार नहीं है।

चरण 3: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) में आशंका को घटित घटना बना दिया गया है। (B) में बच्चों की हँसी को कारण माना गया है, जबकि निर्णायक चिंता गमछे की थी। (D) में संभावित पिटाई दी गई है, पर यहाँ पूछी गई तात्कालिक आशंका गमछा फटने की है।

चरण 4: निष्कर्ष आनंदा गमछा फट जाने के संभावित भय के कारण रुआँसा हो गया। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: इस प्रसंग में 'फट गया' और 'फट जाने का डर' में अंतर करें; आनंदा की चिंता संभावित नुकसान को लेकर थी।

6(vii). छोटे टीलों पर बनी बस्ती को क्या कहकर पुकारा जाता था ? [1 अंक]

(A) नीचे क्षेत्र

(B) नीचा घर

(C) नीचा नगर

(D) पुराना घर

सही उत्तर: (C) नीचा नगर

हल:

अवधारणा:

- मोहनजोदड़ो की बस्तियों का नामकरण।
- उत्तर के लिए पाठ में वर्णित प्रसंग और दिए गए विकल्पों का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग की पहचान मोहनजोदड़ो के नगर-विन्यास में ऊँचाई के आधार पर अलग-अलग हिस्सों का उल्लेख है। छोटे टीलों पर बनी बस्ती को नीचा नगर कहा जाता था। यहाँ 'नीचा' भूस्थिति को व्यक्त करता है।

चरण 2: निर्णायक तथ्य प्रश्न किसी एक मकान का नाम नहीं, पूरी बस्ती के प्रचलित नाम की पहचान पूछता है। इसलिए उत्तर में नगर वाला पद आवश्यक है। छोटे टीलों की अपेक्षाकृत कम ऊँचाई इस नाम को याद रखने में सहायता करती है।

चरण 3: अन्य विकल्पों का परीक्षण नीचे क्षेत्र पाठ में प्रयुक्त बस्ती का नाम नहीं है। नीचा घर और पुराना घर एक घर की ओर संकेत करते हैं, जबकि प्रश्न पूरी बस्ती का है। इस प्रकार शेष तीनों विकल्प सही नाम नहीं देते।

चरण 4: निष्कर्ष छोटे टीलों पर बनी बस्ती को नीचा नगर कहा जाता था। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: छोटे टीलों की पूरी बस्ती का नाम याद रखें—नीचा नगर; इसे किसी अकेले घर का नाम न समझें।

6(viii). लेखक के पिता गाँव में सबसे पहले कोल्हू क्यों चलाते थे ? [1 अंक]

(A) काम खत्म करने के लिए

(B) पैसा बचाने के लिए

(C) बच्चे पर शासन के लिए

(D) ईख की अच्छी कीमत के लिए

सही उत्तर: (D) ईख की अच्छी कीमत के लिए

हल:

अवधारणा:

- पिता की खेती संबंधी आर्थिक मंशा।
- उत्तर के लिए पाठ में वर्णित प्रसंग और दिए गए विकल्पों का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग की पहचान लेखक के पिता खेती के काम में आर्थिक लाभ का ध्यान रखते थे। गाँव में सबसे पहले कोल्हू चलाने के पीछे उपज से अच्छी कीमत पाने की मंशा थी। यह प्रश्न उसी व्यावहारिक उद्देश्य को पहचानने का है।

चरण 2: निर्णायक तथ्य जल्दी कोल्हू चलाने से ईख की फसल को समय रहते उपयोग में लाकर अच्छी कीमत पाने की संभावना रहती थी। इसलिए पहले काम शुरू करने को केवल जल्दी काम समाप्त करने की इच्छा से नहीं जोड़ना चाहिए।

चरण 3: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) काम खत्म करना सामान्य परिणाम है, मुख्य उद्देश्य नहीं। (B) पैसा बचाना और अच्छी कीमत पाना अलग बातें हैं। (C) बच्चे पर शासन करना इस काम को सबसे पहले शुरू करने का आर्थिक कारण नहीं है। पाठानुकूल विकल्प (D) है।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक के पिता ईख की अच्छी कीमत पाने के लिए गाँव में सबसे पहले कोल्हू चलाते थे। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: कोल्हू सबसे पहले चलाने की बात को फसल के आर्थिक लाभ से जोड़ें; इससे अच्छी कीमत वाला विकल्प स्पष्ट होगा।

6(x). यशोधर बाबू चाहते थे कि उनके बच्चे : [1 अंक]

(A) दफ़्तर पैदल जाएँ

(B) पैसा खर्च करें

(C) उनसे पूछ कर काम करें

(D) अपना निर्णय स्वयं लें

सही उत्तर: (C) उनसे पूछ कर काम करें

हल:

अवधारणा:

- पिता-पुत्र संबंध और निर्णय का अधिकार।
- उत्तर के लिए पाठ में वर्णित प्रसंग और दिए गए विकल्पों का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग की पहचान यशोधर बाबू परंपरागत पारिवारिक व्यवस्था को महत्त्व देते थे। वे चाहते थे कि बच्चे कोई काम करने से पहले उनसे पूछें। इससे परिवार में पिता के अनुभव और अधिकार को मिलने वाली मान्यता प्रकट होती है।

चरण 2: निर्णायक तथ्य उनकी अपेक्षा केवल किसी एक खर्च या दफ़्तर आने-जाने के तरीके तक सीमित नहीं थी। वे बच्चों के निर्णयों में अपनी सलाह और सहमति का स्थान चाहते थे। इसलिए प्रश्न का उत्तर व्यापक पारिवारिक व्यवहार से जुड़ा है।

चरण 3: अन्य विकल्पों का परीक्षण दफ़्तर पैदल जाना उनकी मुख्य अपेक्षा नहीं है। पैसा खर्च करना भी इस कथन का आशय नहीं। अपना निर्णय स्वयं लेना बच्चों की स्वतंत्रता को व्यक्त करता है, जबकि यशोधर बाबू उनसे पहले पूछे जाने की अपेक्षा रखते थे।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर बाबू चाहते थे कि उनके बच्चे उनसे पूछकर काम करें। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: यशोधर बाबू की परंपरागत पिता वाली भूमिका याद करें; उनकी अपेक्षा निर्णय से पहले सलाह लेने की थी।

7(क). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
जी-20 शिखर सम्मेलन 2023 [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में तथ्यों के साथ अपनी अनुभूति और कल्पना का संतुलित समावेश होता है। विषय से भटकने के बजाय उसके मानवीय और सामाजिक महत्त्व को प्रभावपूर्ण भाषा में उभारना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में उपयुक्त शीर्षक, आकर्षक आरंभ, सुसंगत विषय-विस्तार और सार्थक समापन अपेक्षित हैं। छोटे वाक्य और सहज बिंब अभिव्यक्ति को स्पष्ट बनाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषय की रूपरेखा आरंभ में नई दिल्ली में हुए आयोजन की जीवंत झलक दें। फिर भारत की मेजबानी, विश्व की साझा चुनौतियों और समावेशी सहयोग को जोड़ें। अंत में संवाद और भविष्य की आशा की बात करें। इस रचनात्मक लेख में पत्र का पता, संबोधन या औपचारिक समापन नहीं होगा।

चरण 2: तथ्यों और अभिव्यक्ति का चयन आयोजन को केवल सड़कों की सजावट तक सीमित न करें। अफ्रीकी संघ की सदस्यता और नई दिल्ली घोषणा जैसे तथ्य विषय को ठोस आधार देते हैं। तथ्यों को यांत्रिक सूची बनाने के स्थान पर सहयोग और विश्वबंधुत्व की अनुभूति से जोड़ें। किसी काल्पनिक निर्णय या घोषणा का उल्लेख न करें।

चरण 3: पूरा नमूना रचनात्मक लेख **जी-20 शिखर सम्मेलन 2023 : विश्व एक परिवार**

सितंबर 2023 में नई दिल्ली विश्व के संवाद का आँगन बन गई। सजी सड़कों और भारत मंडपम में जुटे नेताओं के बीच भारत का आतिथ्य मुसकरा रहा था। जी-20 शिखर सम्मेलन का संदेश था—एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य। यह भावना केवल मंच की सजावट नहीं, आज की आवश्यकता भी है। जलवायु संकट, आर्थिक असमानता और विकास के प्रश्न किसी एक देश की सीमा में नहीं बँधते। अफ्रीकी संघ को स्थायी सदस्यता मिलने से वैश्विक सहयोग का दायरा बढ़ा। नई दिल्ली घोषणा ने साझा प्रयासों की आशा जगाई। भारतीय संस्कृति और डिजिटल प्रगति की झलक ने आयोजन को विशिष्ट बनाया। सम्मेलन ने मुझे सिखाया कि मतभेदों के बीच संवाद संभव है; विश्व का कल प्रतिस्पर्धा से अधिक सहयोग पर निर्भर करता है।

चरण 4: निष्कर्ष इस लेख में विषयानुकूल तथ्य, सजीव आरंभ और विचारपूर्ण समापन का संतुलन है। उपलब्धियों का उल्लेख मानवीय अनुभूति के साथ होने से रचना प्रभावपूर्ण बनती है।

त्वरित सुझाव: पहले आरंभ, दो प्रमुख तथ्य और अंतिम संदेश की रूपरेखा बनाएँ; फिर इन्हें जोड़कर लगभग 120 शब्दों का सुसंगत लेख लिखें।

7(ख). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में तथ्यों के साथ अपनी अनुभूति और कल्पना का संतुलित समावेश होता है। विषय से भटकने के बजाय उसके मानवीय और सामाजिक महत्त्व को प्रभावपूर्ण भाषा में उभारना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में उपयुक्त शीर्षक, आकर्षक आरंभ, सुसंगत विषय-विस्तार और सार्थक समापन अपेक्षित हैं। छोटे वाक्य और सहज बिंब अभिव्यक्ति को स्पष्ट बनाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषय की रूपरेखा आरंभ में आकाश की ओर देखते बालक की कल्पना से वैज्ञानिक जिज्ञासा का चित्र बनाएँ। फिर चंद्रयान-3 और आदित्य-एल1 का उल्लेख करते हुए वैज्ञानिक उपलब्धियों को सामान्य जीवन से जोड़ें। अंत में युवाओं के सपनों और उत्तरदायित्व का संदेश दें। लेख के लिए शीर्षक और अनुच्छेद पर्याप्त हैं।

चरण 2: तथ्यों और अभिव्यक्ति का चयन मुख्य सामग्री में चंद्रयान-3 की सफल चंद्र-अवतरण उपलब्धि, सूर्य के अध्ययन हेतु आदित्य-एल1 और उपग्रहों की उपयोगिता शामिल करें। वैज्ञानिकों के परिश्रम को रेखांकित करें। भविष्य की आकांक्षा को पूर्ण हो चुकी घटना की तरह न लिखें; उपलब्धि और आशा का अंतर भाषा से स्पष्ट रहे।

चरण 3: पूरा नमूना रचनात्मक लेख **अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम**

कभी चाँद को देखकर कहानियाँ बुनने वाला भारत आज उसकी धरती पर अपने विज्ञान की छाप छोड़ रहा है। चंद्रयान-3 की सफलता ने करोड़ों आँखों में गर्व की चमक भर दी। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र के निकट सफल अवतरण ने भारतीय वैज्ञानिकों के धैर्य और प्रतिभा को विश्व के सामने रखा। सूर्य के अध्ययन के लिए आदित्य-एल1 का प्रक्षेपण हमारी जिज्ञासा का अगला कदम बना। अंतरिक्ष यात्रा केवल गौरव का विषय नहीं; उपग्रह मौसम की जानकारी, संचार और आपदा प्रबंधन में भी सहायक हैं। इन उपलब्धियों के पीछे वर्षों का अनुशासन और असफलताओं से सीखने का साहस है। आज कोई बच्चा आकाश की ओर देखता है तो उसे दूर के तारे ही नहीं, अपने भविष्य की संभावनाएँ भी दिखाई देती हैं।

चरण 4: निष्कर्ष इस लेख में विषयानुकूल तथ्य, सजीव आरंभ और विचारपूर्ण समापन का संतुलन है। उपलब्धियों का उल्लेख मानवीय अनुभूति के साथ होने से रचना प्रभावपूर्ण बनती है।

त्वरित सुझाव: पहले आरंभ, दो प्रमुख तथ्य और अंतिम संदेश की रूपरेखा बनाएँ; फिर इन्हें जोड़कर लगभग 120 शब्दों का सुसंगत लेख लिखें।

7(ग). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

पोषक अनाज स्वास्थ्य का खजाना [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय के तथ्य, निजी अनुभूति और प्रभावपूर्ण भाषा का संतुलन रखा जाता है।
- पोषक अनाज के उदाहरणों को स्वास्थ्य, भोजन की विविधता और दैनिक जीवन से जोड़ना विषय का मुख्य आधार है।

चरण 1: प्रारूप और विषय-विस्तार लेख को उपयुक्त शीर्षक दें। आरंभ में थाली का परिचित चित्र उभारें; मध्य में बाजरा, ज्वार और रागी जैसे अनाजों के पोषण तथा उपयोग बताएँ; अंत में इन्हें अपनाने का प्रेरक संदेश दें। छोटे, सहज वाक्यों और ठोस उदाहरणों से विषय को रोचक बनाएँ। शीर्षक विषय के अनुकूल रहे और प्रत्येक विचार अगले विचार से जुड़ा हो। व्यक्तिगत अनुभव का संकेत लेख को आत्मीय बनाता है, जबकि उपयोगी तथ्य उसे विश्वसनीय बनाते हैं।

चरण 2: विचारों का क्रम अनाजों के नामों की सूची भर न दें। उनका भोजन और जीवन से संबंध दिखाएँ। रेशे, खनिज और संतुलित भोजन के महत्त्व को सरल भाषा में रखें। किसी रोग के निश्चित उपचार का दावा न करें। लगभग 120 शब्दों के लेख में आरंभ, विस्तार और निष्कर्ष का स्वाभाविक प्रवाह रहे।

चरण 3: पूर्ण रचनात्मक लेख **पोषक अनाज स्वास्थ्य का खजाना**

दादी की थाली में बाजरे की रोटी देखकर कभी हम नाक सिकोड़ते थे, आज उसी थाली में स्वास्थ्य का खजाना दिखाई देता है। बाजरा, ज्वार, रागी और कोदो जैसे पोषक अनाज स्वाद के साथ शरीर को उपयोगी पोषक तत्त्व देते हैं। इनमें उपस्थित रेशे पाचन में सहायक होते हैं। रागी कैल्शियम का अच्छा स्रोत है। इन अनाजों से रोटी ही नहीं, दलिया, खिचड़ी और स्वादिष्ट पकवान भी बनाए जा सकते हैं। कम पानी में उगने वाले अनेक पोषक अनाज पर्यावरण के भी साथी हैं। चमकदार पैकेटों के आकर्षण में अपनी परंपरागत थाली को भूलना समझदारी नहीं है। आइए, भोजन में विविधता लाएँ और पोषक अनाजों को नियमित स्थान दें। स्वस्थ जीवन की शुरुआत हमारी अपनी रसोई से होती है।

चरण 4: निष्कर्ष यह लेख पोषण, परंपरा और पर्यावरण को जोड़ते हुए पोषक अनाजों को संतुलित भोजन में स्थान देने की प्रेरणा देता

है।

त्वरित सुझाव: पहले थाली का जीवंत चित्र सोचें, फिर दो ठोस लाभ और अंत में अपनाने का संदेश लिखें।

8(i)(a). कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय पात्रों के मनोभावों को, द्वंद्वों को किस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में वर्णन द्वारा व्यक्त अंतर्मन को नाटक में दृश्य और श्रव्य संकेतों में बदलना पड़ता है।
- संवाद, स्वगत कथन, अभिनय तथा रंगनिर्देश पात्र के मनोभाव और मानसिक द्वंद्व स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: अंतर्मन को वाणी देना पात्र की अनुभूतियों को प्रसंगानुकूल संवादों में ढाला जा सकता है। जहाँ वह अपने मन में दो विरोधी विचारों से जूझता हो, वहाँ स्वगत कथन से उसका द्वंद्व व्यक्त करें। संवाद पात्र के स्वभाव के अनुरूप हों; कथाकार का पूरा वर्णन ज्यों का त्यों संवाद न बना दें।

चरण 2: दृश्य संकेतों से भाव उभारना चेहरे के भाव, दृष्टि, शारीरिक मुद्राएँ, हावभाव और स्वर के उतार-चढ़ाव से खुशी, भय, क्रोध या असमंजस दिखाएँ। विराम, मौन और मंच पर पात्र की गतिविधि भी संघर्ष को प्रभावी बनाते हैं। आवश्यक रंगनिर्देश दें, जैसे निर्णय न कर पाने पर पात्र का ठिठकना या व्याकुल होकर टहलना।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी के मनोभाव और द्वंद्व नाटक में संवाद, स्वगत कथन, हावभाव, स्वर, मौन तथा उपयुक्त रंगनिर्देशों के माध्यम से प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

त्वरित सुझाव: भाव का केवल नाम लिखने के बजाय बताएँ कि अभिनेता उसे वाणी, मुद्रा या मौन से कैसे दिखाएगा।

अथवा

8(i)(b). 'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' पाठ के आधार पर रावण और कुंभकरण के बीच हुए संवाद को दृश्य के रूप में प्रस्तुत कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दृश्य रूपांतरण में मूल प्रसंग का आशय सुरक्षित रखते हुए संवाद और संक्षिप्त मंचनिर्देश दिए जाते हैं।
- कुंभकरण रावण के सीताहरण की निंदा करता है और राम की दिव्य शक्ति के सामने उसके अहंकार की निरर्थकता बताता है।

चरण 1: दृश्य की स्थिति स्थान लंका का राजमहल है। कुंभकरण निद्रा से जगाया गया है। चिंतित रावण उसे युद्ध की स्थिति बताता है। दृश्य में पहले रावण की व्यथा, फिर कुंभकरण की स्पष्ट चेतावनी उभरनी चाहिए।

चरण 2: संवाद रूप में प्रस्तुति **दृश्य : लंका का राजमहल**

(रावण चिंतित है। निद्रा से जागा कुंभकरण उसके सामने आता है।)

कुंभकरण : भाई, मुझे क्यों जगाया? तुम्हारा मुख इतना उदास क्यों है?

रावण : मैं सीता को हर लाया। राम से युद्ध में हमारे बड़े-बड़े योद्धा मारे गए। लंका संकट में है।

कुंभकरण : तुम जगज्जननी सीता को हर लाए और अब कल्याण चाहते हो! यह भारी भूल की है।

रावण : अब इस संकट में तुम ही मेरा सहारा हो।

कुंभकरण : राम साधारण मनुष्य नहीं हैं। उनके विरोध में तुम्हारा उद्धार कठिन है। अहंकार छोड़ो और राम का स्मरण करो।

(कुंभकरण रावण के कर्म पर खेद प्रकट करता है। रावण व्याकुल बना रहता है।)

चरण 3: निष्कर्ष इस दृश्य में रावण की चिंता और कुंभकरण की निर्भीक चेतावनी के माध्यम से सीताहरण की भूल तथा राम-विरोध का विनाशकारी परिणाम स्पष्ट होता है।

त्वरित सुझाव: नाट्य संवाद छोटे रखें और कुंभकरण की चेतावनी में मूल पाठ का सीताहरण-विरोधी आशय सुरक्षित रखें।

8(ii)(a). रेडियो नाटक की तुलना में सिनेमा और रंगमंच की लोकप्रियता का क्या कारण है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; उसमें संवाद, संगीत और ध्वनि-प्रभावों से दृश्य का आभास कराया जाता है।
- सिनेमा और रंगमंच में दर्शक अभिनय, हावभाव, वेशभूषा तथा दृश्य-सज्जा को प्रत्यक्ष देखता है।

चरण 1: माध्यमों के अंतर को समझना रेडियो नाटक केवल सुनाई देता है। श्रोता को पात्रों के रूप, उनके कार्य और घटनास्थल की कल्पना ध्वनियों के आधार पर करनी पड़ती है। इसलिए उसकी प्रस्तुति का प्रभाव मुख्यतः संवादों और ध्वनि-संकेतों पर निर्भर रहता है।

चरण 2: लोकप्रियता के कारण बताना सिनेमा और रंगमंच श्रव्य होने के साथ दृश्य भी हैं। दर्शक पात्रों के चेहरे के भाव, शारीरिक गतिविधियाँ, वेशभूषा और परिवेश को प्रत्यक्ष देखता है। दृश्य और ध्वनि का संयुक्त प्रभाव कथा को अधिक सजीव, आकर्षक और सहज बोधगम्य बनाता है। इसी कारण ये माध्यम व्यापक दर्शक-वर्ग को आकर्षित करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष दृश्य और श्रव्य प्रभावों का मेल, प्रत्यक्ष अभिनय और सजीव प्रस्तुति सिनेमा तथा रंगमंच की अधिक लोकप्रियता के प्रमुख कारण हैं।

त्वरित सुझाव: तुलना लिखते समय रेडियो के केवल श्रव्य स्वरूप को सिनेमा और रंगमंच के दृश्य-श्रव्य स्वरूप से जोड़िए।

अथवा

8(ii)(b). अप्रत्याशित लेखन में किन बातों का ध्यान रखा जाता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अप्रत्याशित विषय पर लेखन में पूर्व-रटी सामग्री के बजाय स्वतंत्र चिंतन और कल्पनाशक्ति महत्त्वपूर्ण हैं।
- विषय की समझ, विचारों की क्रमबद्धता और सहज भाषा रचना को प्रभावी बनाते हैं।

चरण 1: विषय और विचारों का चयन सबसे पहले दिए गए विषय का अर्थ समझकर उसकी सीमा तय करनी चाहिए। उससे जुड़े अपने अनुभवों, स्मृतियों और विचारों पर सोचकर उपयुक्त बिंदु चुनने चाहिए। मौलिक दृष्टि और कल्पनाशीलता आवश्यक हैं; विषय से असंबद्ध बातों तथा रटी हुई सामग्री से बचना चाहिए।

चरण 2: विचारों की प्रस्तुति चुने हुए विचारों को आरंभ, विस्तार और अंत के क्रम में व्यवस्थित करना चाहिए। भाषा सरल, स्पष्ट और प्रवाहपूर्ण हो तथा वाक्यों में परस्पर संबंध बना रहे। रोचक उदाहरणों का उपयोग करते हुए अनावश्यक दोहराव से बचना चाहिए। लिखने के बाद विषयानुकूलता, वर्तनी और निर्धारित शब्द-सीमा की जाँच करनी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष अप्रत्याशित लेखन में विषय की सही समझ, मौलिक चिंतन, क्रमबद्ध विचार, सहज भाषा और शब्द-सीमा का ध्यान रखा जाता है।

त्वरित सुझाव: लिखने से पहले विषय से जुड़े कुछ बिंदु चुनकर उनका क्रम तय कर लीजिए; फिर एकसूत्रता जाँचिए।

9(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

प्रिंट माध्यम की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकें प्रिंट माध्यम के उदाहरण हैं।
- मुद्रित सामग्री को पाठक अपनी गति और सुविधा के अनुसार पढ़कर सुरक्षित रख सकता है।

चरण 1: मुख्य विशेषताओं की पहचान प्रिंट माध्यम में शब्द और चित्र स्थायी मुद्रित रूप में उपलब्ध होते हैं। पाठक अपनी रुचि के अनुसार सामग्री चुन सकता है और उसे अपनी गति से पढ़ सकता है। किसी कठिन अंश को समझने के लिए दोबारा पढ़ना भी संभव है। प्रसारण की तरह सामग्री तुरंत समाप्त नहीं होती।

चरण 2: उपयोगिता और सीमा समझना मुद्रित सामग्री को संग्रहित करके भविष्य में संदर्भ के रूप में उपयोग किया जा सकता है। समाचार और विचारों को विस्तार तथा विश्लेषण के साथ प्रस्तुत करने की सुविधा भी मिलती है। इसके उपयोग के लिए पढ़ना आना आवश्यक है। इस प्रकार इसकी स्थायित्व और पुनर्पाठ की सुविधा महत्त्वपूर्ण है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर प्रिंट माध्यम में समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकें आते हैं। इसकी सामग्री स्थायी होती है, जिसे सुरक्षित रखकर बार-बार पढ़ा जा सकता है। पाठक अपनी सुविधा और गति से विषय चुनकर पढ़ता है। इसमें समाचारों तथा विचारों का विस्तृत विवेचन संभव है। यह संदर्भ के लिए उपयोगी है, किंतु इसका लाभ उठाने के लिए साक्षर होना आवश्यक है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रिंट माध्यम की प्रमुख विशेषताएँ स्थायित्व, पुनर्पाठ, पाठकीय स्वतंत्रता, विस्तृत विवेचन और संदर्भ के लिए उपयोगिता हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में स्थायित्व और दोबारा पढ़ने की सुविधा अवश्य लिखिए तथा साक्षरता की आवश्यकता स्पष्ट कीजिए।

9(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'जनसंचार के विभिन्न माध्यमों के बीच अंतर चाहे जितना हो लेकिन वे एक-दूसरे के पूरक और सहयोगी हैं, प्रतिद्वंदी नहीं।' सिद्ध कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हर माध्यम की अपनी पहुँच, प्रस्तुति-शैली और उपयोगिता होती है।
- एक ही सूचना को अलग-अलग ढंग से प्रस्तुत करके विभिन्न माध्यम जनसंचार को अधिक व्यापक और प्रभावी बनाते हैं।

चरण 1: माध्यमों की अलग-अलग शक्तियाँ प्रिंट माध्यम में पाठक समाचार का विस्तृत विवरण और विश्लेषण पढ़ सकता है। रेडियो आवाज के माध्यम से सूचना पहुँचाता है और उसे अन्य काम करते हुए भी सुना जा सकता है। टेलीविजन घटनाओं को दृश्य और ध्वनि के साथ प्रस्तुत करता है। इनकी अलग विशेषताएँ अलग संचार-आवश्यकताएँ पूरी करती हैं।

चरण 2: सहयोग का संबंध स्पष्ट करना एक माध्यम से किसी घटना की त्वरित जानकारी मिलने पर दूसरे माध्यम से उसका विस्तार जाना जा सकता है। जैसे रेडियो पर समाचार सुनने वाला व्यक्ति टेलीविजन पर घटना के दृश्य देख सकता है और अखबार में उसका विश्लेषण पढ़ सकता है। इस प्रकार माध्यम एक-दूसरे की जानकारी को पुष्ट और समृद्ध करते हैं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर जनसंचार के प्रत्येक माध्यम की अपनी विशेषता है। रेडियो समाचार सुनाता है, टेलीविजन दृश्य सहित घटना दिखाता है और समाचार-पत्र उसका विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। एक माध्यम से मिली सूचना दूसरे से अधिक स्पष्ट तथा पूर्ण होती है। अलग-अलग रुचि और सुविधा वाले लोगों तक पहुँचकर ये माध्यम सूचना का विस्तार करते हैं। इसलिए वे परस्पर पूरक और सहयोगी हैं।

चरण 4: निष्कर्ष अपनी विशिष्ट क्षमताओं से सूचना को व्यापक, स्पष्ट और पूर्ण बनाकर जनसंचार के माध्यम एक-दूसरे के पूरक और सहयोगी बनते हैं।

त्वरित सुझाव: सिद्ध करने के लिए एक घटना का उदाहरण लेकर रेडियो, टेलीविजन और अखबार की अलग भूमिका जोड़िए।

9(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
क्या पत्रकारिता को जल्दी में लिखा गया साहित्य माना जा सकता है ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता तात्कालिक घटनाओं, तथ्यों और जनजीवन के प्रश्नों को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करती है।
- साहित्य और पत्रकारिता में संवेदनशीलता तथा प्रभावी अभिव्यक्ति साझा हैं, किंतु समाचार में तथ्यपरकता अनिवार्य है।

चरण 1: कथन का आधार समझिए पत्रकार को घटना घटने के तुरंत बाद निश्चित समय सीमा के भीतर समाचार तैयार करना पड़ता है। इसलिए उसकी रचना प्रक्रिया में गति और तात्कालिकता प्रमुख रहती है। साहित्यकार को प्रायः चिंतन, संशोधन और अपनी रचना को सँवारने का अधिक समय मिलता है। इसी अंतर के कारण पत्रकारिता के लिए जल्दी में लिखा गया साहित्य जैसी उक्ति प्रयुक्त होती है।

चरण 2: समानता और सीमा स्पष्ट कीजिए दोनों क्षेत्रों का संबंध समाज और मनुष्य से है तथा दोनों में भाषा की स्पष्टता, रोचकता और संवेदनशीलता उपयोगी हैं। फिर भी पत्रकार को कल्पना से तथ्य गढ़ने की छूट नहीं होती। उसे सूचना की जाँच, सटीकता और उत्तरदायित्व बनाए रखने पड़ते हैं। अतः जल्दी का अर्थ अधूरी पड़ताल या असत्य सूचना देना नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष पत्रकारिता को जल्दी में लिखा गया साहित्य कह सकते हैं, क्योंकि पत्रकार घटनाओं को तत्काल प्रभावी भाषा में प्रस्तुत करता है। उसमें साहित्य जैसी सामाजिक संवेदना और अभिव्यक्ति-कौशल भी होते हैं। किंतु साहित्य में कल्पना की स्वतंत्रता होती है, जबकि पत्रकारिता में सत्यापित तथ्य, सटीकता और जनहित आवश्यक हैं। अतः यह कथन उसकी तात्कालिक रचना-प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में समय की कमी, अभिव्यक्ति-कौशल और तथ्यपरकता की अनिवार्यता तीनों जोड़िए।

10(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
'पतंग' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोक धन्वा की कविता में पतंग बच्चों की उमंग, कल्पना और ऊँचाई छूने की आकांक्षा से जुड़ी है।
- प्रकृति और बालमन के संबंध से उत्साह, निर्भीकता और जीवन के प्रति आकर्षण उभरता है।

चरण 1: कविता का केंद्रीय विषय पहचानिए कविता में वर्षा के बाद साफ हुए आकाश और शरद के उजले वातावरण के बीच पतंग उड़ाते बच्चों का संसार सामने आता है। प्रकृति का खुलापन उनकी कल्पना और गति को विस्तार देता है। पतंग उनके लिए केवल खेलने की वस्तु नहीं रहती; वह आकाश तक पहुँचने की इच्छा और सीमाओं से आगे बढ़ने का माध्यम बन जाती है।

चरण 2: बालमन की ऊर्जा का अर्थ समझिए बच्चे छतों पर दौड़ते हैं और पतंग की डोर के साथ उनका मन भी ऊँचाइयों में विचरता है। खेल में डूबे होने से वे संभावित खतरे को भूल जाते हैं। यह चित्रण उनकी निर्भीकता और तन्मयता को प्रकट करता है। कवि इस बालसुलभ ऊर्जा, रोमांच और जीवन के प्रति असीम आकर्षण को रेखांकित करता है। इस उत्साह में प्रकृति और बालमन एक-दूसरे के पूरक हैं; आकाश का विस्तार बच्चों के भीतर की स्वतंत्रता को साकार करता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'पतंग' कविता का प्रतिपाद्य बच्चों की उमंग, निर्भीकता और ऊँची उड़ान भरने की आकांक्षा है। शरद का स्वच्छ आकाश उनकी कल्पना को विस्तार देता है। पतंग उड़ाते बच्चे छतों पर दौड़ते हुए खतरों को भूल जाते हैं। पतंग उनकी इच्छाओं और सपनों का प्रतीक बनती है। कविता बालमन की तन्मयता, उत्साह तथा जीवन की असीम संभावनाओं को उभारती है।

त्वरित सुझाव: प्रतिपाद्य बताते समय पतंग को बच्चों के सपनों से जोड़िए और छतों पर उनकी तन्मयता का संकेत दीजिए।

10(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए : भाषा को सहूलियत से बरतने से क्या अभिप्राय है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता कथ्य और भाषा के सहज संबंध पर बल देती है।
- सार्थक अभिव्यक्ति में भाषा भाव के अनुकूल होती है; अनावश्यक चमत्कार कथ्य को उलझा सकता है।

चरण 1: सहूलियत का आशय स्पष्ट कीजिए भाषा को सहूलियत से बरतने का अर्थ है उसे सहज, स्वाभाविक और प्रसंग के अनुकूल ढंग से प्रयोग करना। जो बात सरल है, उसे कठिन शब्दों और कृत्रिम वाक्य-विन्यास में बाँधने की आवश्यकता नहीं है। भाषा का चयन भाव को स्पष्ट करे और पाठक तक पहुँचाए; केवल भाषायी कौशल दिखाना अभिव्यक्ति का उद्देश्य नहीं होना चाहिए।

चरण 2: कविता के अनुभव से संबंध जोड़िए कविता में सीधी बात भाषा के चक्कर में उलझ जाती है। कवि उसे प्रभावशाली बनाने के प्रयास में इतना घुमाता है कि उसकी सहजता और अर्थ की पकड़ कमजोर पड़ जाती है। पेंच के बिंब से यही स्थिति स्पष्ट होती है। इसलिए भाषा पर अनावश्यक जोर डालने के स्थान पर बात और भाषा के स्वाभाविक तालमेल को स्वीकार करना चाहिए। कविता का संकेत है कि भाषा साधन है और कथ्य उसका लक्ष्य; दोनों में संतुलन रहने पर ही संप्रेषण सफल बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष भाषा को सहूलियत से बरतने का अभिप्राय है भाव और विचार के अनुकूल सरल, सहज तथा स्वाभाविक भाषा अपनाना। अनावश्यक कठिन शब्दों, आडंबर और चमत्कार के लिए बात को उलझाना उचित नहीं है। 'बात सीधी थी पर' में कवि बताता है कि भाषा को जबरदस्ती मोड़ने से कथ्य की सहजता नष्ट हो जाती है और उसका अर्थ पाठक तक नहीं पहुँचता।

त्वरित सुझाव: सहूलियत को लापरवाही न लिखें; उसे सहज भाषा, स्पष्ट कथ्य और कृत्रिमता से बचाव के रूप में समझाएँ।

10(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए : छोटे चौकोने खेत को काग़ज़ का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उमाशंकर जोशी ने कविता की रचना-प्रक्रिया को खेती के विस्तृत रूपक से समझाया है।
- कागज का पन्ना खेत है; उसमें भाव-विचार और कल्पना के माध्यम से शब्दरूपी फसल तैयार होती है।

चरण 1: खेत और पन्ने की समानता समझिए खेत और कागज का पन्ना आकार में चौकोने हो सकते हैं, किंतु कविता का आशय केवल बाहरी आकृति की समानता बताना नहीं है। जैसे किसान खेत में बीज बोकर फसल उगाता है, वैसे ही कवि पन्ने पर अपने अनुभवों और भावों को शब्द देता है। छोटा-सा पन्ना इस प्रकार रचनात्मक श्रम और नई सृष्टि का आधार बन जाता है।

चरण 2: काव्य-सृजन का निहित अर्थ बताइए कवि के भीतर उठने वाला भाव बीज के समान है। कल्पना और अभिव्यक्ति से वह विकसित होकर शब्दों की रचना बनता है। खेत की साधारण फसल कटने पर समाप्त होती जाती है, पर कविता का रस पाठक बार-बार प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए पन्ने को खेत कहने से सीमित स्थान में जन्म लेने वाली रचना के व्यापक और अक्षय आनंद का बोध होता है। यहाँ कवि किसान के समान सर्जक है और पाठक उस फसल का रस ग्रहण करते हैं; रूपक रचना और आस्वादन दोनों को जोड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष कागज के पन्ने को छोटा चौकोना खेत कहकर कवि ने काव्य-सृजन की तुलना खेती से की है। जैसे खेत में बीज से फसल उगती है, वैसे ही पन्ने पर भाव-विचार का बीज कल्पना के सहारे शब्दों की फसल बनता है। आकार में छोटा पन्ना अपार रचनात्मक संभावनाएँ रखता है। उसकी कविता पाठकों को बार-बार अक्षय आनंद प्रदान करती है।

त्वरित सुझाव: सिर्फ चौकोने आकार की समानता तक न रुकें; भाव के बीज और शब्दों की फसल का संबंध अवश्य बताइए।

11(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए : 'कवितावली' के छंद के आधार पर लिखिए कि पेट की आग से क्या तात्पर्य है। उसकी तुलना 'बड़वाग्नि' से क्यों की गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पेट की आग भूख का रूपक है; इसका संबंध भोजन के अभाव और आजीविका के संकट से है।
- बड़वाग्नि समुद्र की प्रचंड अग्नि है। तुलना का आधार भूख की सर्वग्रासी और अनियंत्रित शक्ति है।

चरण 1: रूपक का अर्थ समझिए तुलसीदास पेट की आग कहकर शरीर में जलने वाली वास्तविक आग की चर्चा नहीं करते। उनका आशय उस भूख से है जो मनुष्य को लगातार व्याकुल रखती है। छंद में विविध व्यवसायों और कर्मों का उल्लेख यह दिखाता है कि जीविका तथा पेट भरने की आवश्यकता मनुष्य को अनेक काम करने के लिए बाध्य करती है।

चरण 2: तुलना का आधार पहचानिए समुद्र की बड़वाग्नि अत्यंत प्रचंड मानी जाती है। कवि भूख की ज्वाला को उससे भी अधिक प्रबल बताते हैं, क्योंकि भूख विवेक और मर्यादा तक भुला सकती है। तुलना केवल जलन की नहीं, मनुष्य के समस्त व्यवहार को प्रभावित करने वाली तीव्रता की है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर पेट की आग का अर्थ भूख की तीव्र पीड़ा है। इसे शांत करने के लिए मनुष्य कठिन और अनुचित काम तक करता है। इसकी तुलना बड़वाग्नि से इसलिए हुई है कि भूख की ज्वाला अत्यंत प्रचंड, सर्वग्रासी और असहनीय होती है।

चरण 4: निष्कर्ष पेट की आग भूख की असहनीय पीड़ा है; बड़वाग्नि से तुलना उसकी प्रचंडता को व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले भूख का अर्थ लिखिए, फिर तुलना का आधार उसकी प्रचंडता और विवेक पर प्रभाव से स्पष्ट कीजिए।

11(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए : 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता से उद्धृत पंक्ति "हम पूछ-पूछकर उसको रुला देंगे" में कैसा भाव निहित है ? इस कथन से मीडियाकर्मियों के विषय में क्या पता चलता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता पीड़ित व्यक्ति की वेदना को प्रदर्शन की वस्तु बनाने वाली मीडिया प्रवृत्ति पर व्यंग्य करती है।
- कथन में वास्तविक करुणा के स्थान पर योजनाबद्ध क्रूरता और व्यावसायिक स्वार्थ दिखाई देता है।

चरण 1: कथन में निहित भाव पहचानिए पूछ-पूछकर रुलाने का निश्चय बताता है कि साक्षात्कारकर्ता उत्तर जानने तक सीमित नहीं है। वह ऐसे प्रश्न दोहराना चाहता है जिनसे अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा उभरे और उसकी आँखों में आँसू आ जाएँ। इस प्रकार व्यक्ति की गरिमा के स्थान पर दर्शकों पर पड़ने वाला प्रभाव प्राथमिक बन जाता है।

चरण 2: मीडियाकर्मियों की मानसिकता स्पष्ट कीजिए मीडियाकर्मी उसकी सहायता या उसका दुख कम करने की कोशिश नहीं करते। वे दुख का मार्मिक दृश्य तैयार करके अपने कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाना चाहते हैं। कवि इसी बनावटी सहानुभूति पर व्यंग्य करता है; दूसरों को रुलाकर करुणा दिखाने की यह प्रक्रिया स्वयं संवेदनहीन है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर इस पंक्ति में संवेदनहीनता और क्रूर व्यावसायिकता का भाव है। मीडियाकर्मी अपाहिज की पीड़ा कुरेदकर उसे रुलाना चाहते हैं, ताकि कार्यक्रम मार्मिक बने। इससे स्पष्ट है कि उनकी सहानुभूति बनावटी है; वे मानवीय गरिमा से अधिक प्रदर्शन को महत्त्व देते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन मीडिया की बनावटी करुणा, संवेदनहीनता और पीड़ा के व्यावसायिक प्रदर्शन को उजागर करता है।

त्वरित सुझाव: रुलाने की सुनियोजित कोशिश को सच्ची सहानुभूति न मानें; व्यक्ति की पीड़ा को कार्यक्रम की सामग्री बनाने पर ध्यान दें।

11(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया' –
'बादल राग' कविता की इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समीर-सागर वायु के विस्तृत क्षेत्र का बिंब है, जिसमें बादल तैरते दिखाई देते हैं।
- दुख की छाया और अस्थिर सुख का संबंध जीवन के परिवर्तनशील स्वभाव तथा बादल के क्रांतिकारी संकेत से है।

चरण 1: प्राकृतिक बिंब समझिए कवि वायु के विस्तार की कल्पना सागर के रूप में करता है। उसके ऊपर बादल की छाया तैर रही है। इस दृश्य के माध्यम से वह केवल मौसम का वर्णन नहीं करता, बल्कि जीवन में सुख-दुख की स्थिति को भी मूर्त रूप देता है। छाया के आने से प्रकाश स्थायी और निर्विघ्न नहीं रहता।

चरण 2: मानवीय और सामाजिक संकेत स्पष्ट कीजिए सुख अस्थिर है और उसके ऊपर दुख की आशंका बनी रहती है। कविता में बादल परिवर्तन तथा क्रांति का प्रतीक भी है। इसलिए संपन्न वर्ग का सुख भी सुरक्षित नहीं है; शोषितों के जागरण और परिवर्तन की आहट उसे भयभीत करती है। भावार्थ में इस आशंका को सुख की क्षणभंगुरता से जोड़ना चाहिए।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर वायु रूपी सागर पर तैरती बादल की छाया बताती है कि जीवन का सुख स्थायी नहीं; उस पर दुख की आशंका छाई रहती है। क्रांति के प्रतीक बादल के आगमन से सुख-सुविधा में डूबे संपन्न वर्ग का सुख भी भय और अनिश्चितता से घिर जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष पंक्तियाँ सुख की अस्थिरता और उसके ऊपर मंडराती दुख तथा परिवर्तन की आशंका को व्यक्त करती हैं।

त्वरित सुझाव: समीर-सागर का प्राकृतिक अर्थ बताकर उसे अस्थिर सुख से जोड़ें; कविता में बादल के क्रांतिकारी संकेत को भी याद रखें।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'जीवन में प्राय: सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है' – अपने आसपास से उदाहरण देकर 'भक्तिन' पाठ के इस कथन के पक्ष में तर्क प्रस्तुत कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाम प्राय: माता-पिता की शुभकामना या आदर्श का संकेत होता है; वह व्यक्ति की वास्तविक दशा का प्रमाण नहीं होता।
- भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन अर्थात लक्ष्मी है, किंतु उसके जीवन में संपन्नता और सुख के स्थान पर अभाव तथा संघर्ष हैं।

चरण 1: पाठ के प्रसंग से कथन समझिए भक्तिन का नाम लछमिन है, जिसका संबंध धन-समृद्धि की देवी लक्ष्मी से है। पर उसका जीवन कठिन श्रम, पारिवारिक उपेक्षा और अभाव में बीतता है। नाम से मिलने वाला समृद्धि का संकेत उसके अनुभवों से मेल नहीं खाता। इसी विरोधाभास को लेखिका सामान्य जीवन तक विस्तृत करती हैं। नाम जान लेने से किसी व्यक्ति का स्वभाव या जीवन-स्तर नहीं जाना जा सकता।

चरण 2: आसपास के उदाहरणों से तर्क दीजिए उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति धनराज कहलाने पर भी आर्थिक कठिनाइयों में रह सकता है। किसी का नाम शांति हो, फिर भी वह चिड़चिड़े स्वभाव का हो सकता है; सुखदेव नाम वाला व्यक्ति दुखों से घिर सकता है। ये सामान्य उदाहरण हैं, किसी विशेष वास्तविक व्यक्ति का दावा नहीं। इनसे स्पष्ट है कि नाम के अर्थ और व्यक्ति की परिस्थिति अथवा प्रकृति के बीच अनिवार्य समानता नहीं होती।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर नाम व्यक्ति की वास्तविक दशा या स्वभाव की गारंटी नहीं होता। भक्तिन का नाम लछमिन था, किंतु उसका जीवन समृद्धि के बजाय अभाव और संघर्ष में बीता। हमारे आसपास भी धनराज नाम का व्यक्ति निर्धन और शांति नाम की

महिला क्रोधी हो सकती है। नाम प्रायः शुभकामना व्यक्त करते हैं, जबकि जीवन परिस्थितियों और कर्मों से बनता है।

चरण 4: निष्कर्ष भक्तिन और सामान्य जीवन के उदाहरण सिद्ध करते हैं कि नाम का अर्थ तथा व्यक्ति का वास्तविक जीवन प्रायः अलग होते हैं।

त्वरित सुझाव: तर्क को पाठ की लछमिन से शुरू करें और फिर नाम के अर्थ से विपरीत परिस्थिति या स्वभाव का एक स्पष्ट उदाहरण दें।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए : 'बाज़ार-दर्शन' के आधार पर 'बाज़ार का जादू चढ़ने और उतरने' का आशय स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का आकर्षण मन की रिक्तता और इच्छाओं से जुड़ता है; आवश्यकता का विवेक उसे नियंत्रित करता है।
- जादू चढ़ना वस्तुओं के मोह में पड़ना है; उतरना उनकी वास्तविक उपयोगिता का बोध होना है।

चरण 1: चढ़ने और उतरने का अंतर सजी हुई दुकानों और आकर्षक सामान को देखकर व्यक्ति अपनी आवश्यकता भूल जाता है। उसे हर वस्तु उपयोगी लगती है और अपनी संपन्नता अधूरी दिखाई देती है। खरीदने की यही अनियंत्रित इच्छा बाज़ार का जादू चढ़ना है। सामान घर आने पर उसका अनावश्यक होना स्पष्ट होता है; तब आकर्षण टूटता है और व्यर्थ खर्च का खेद होता है।

चरण 2: आवश्यकता और इच्छा का विवेक लेखक के अनुसार बाज़ार की चमक का प्रभाव तब अधिक होता है जब मन में अपनी आवश्यकता का स्पष्ट ज्ञान नहीं होता। व्यक्ति वस्तु की उपयोगिता के बजाय उसकी सुंदरता और दूसरों के पास होने से प्रभावित होता है। इसलिए उत्तर में जादू का अर्थ वास्तविक चमत्कार नहीं, मन पर पड़ने वाला उपभोक्तावादी आकर्षण समझना चाहिए।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर बाज़ार का जादू चढ़ने पर मनुष्य आकर्षक वस्तुओं से मोहित होकर अपनी वास्तविक ज़रूरत भूल जाता है और अनावश्यक सामान खरीद लेता है। जादू उतरने पर उसे पता चलता है कि खरीदी हुई वस्तुएँ उसके काम की नहीं हैं। तब धन के अपव्यय पर पछतावा होता है और वे वस्तुएँ सुख देने के बदले मन की शांति भंग करती हैं।

चरण 4: निष्कर्ष बाज़ार का जादू इच्छा और आकर्षण का प्रभाव है; उसका उतरना अनावश्यक खरीद का बोध और पछतावा है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले आकर्षण से उत्पन्न खरीदने की इच्छा, फिर खरीद के बाद उपयोगिता का बोध दिखाइए।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए : लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लुट्टन का कथन ढोल की प्रेरक भूमिका और उसके आत्मविश्वास का परिचायक है।
- अखाड़े में ढोल की ताल उसके लिए दाँव लगाने का संकेत बनती है; इसी से वह ढोल को गुरु मानता है।

चरण 1: कथन का प्रसंग और कारण लुट्टन ने किसी पहलवान से विधिवत कुश्ती की शिक्षा नहीं ली थी। श्यामनगर के मेले में चाँद सिंह से कुश्ती के समय ढोल की लय ने उसका साहस बढ़ाया। वह ताल में दाँव-पेंच के निर्देश सुनता था और उसी प्रेरणा से प्रतिद्वंद्वी का सामना करता था। इसलिए गुरु का मार्गदर्शन उसे किसी व्यक्ति के बजाय ढोल में मिला।

चरण 2: गुरु शब्द की सार्थकता गुरु शिष्य का हौसला बढ़ाता और उचित समय पर मार्ग दिखाता है। लुट्टन के लिए ढोल ने यही भूमिका निभाई। उसका कथन ढोल बजाने वाले व्यक्ति को कुश्ती का प्रशिक्षक बताने के लिए नहीं है; वह उस लय के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है जिसने उसे अखाड़े में टिके रहने और अपनी शक्ति पहचानने का विश्वास दिया।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर लुट्टन ने किसी पहलवान से कुश्ती की शिक्षा नहीं ली थी। चाँद सिंह से लड़ते समय ढोल की ताल ने उसे साहस दिया और दाँव लगाने की प्रेरणा दी। वह ढोल की ध्वनि में अपने लिए निर्देश अनुभव करता था। उसी के सहारे उसने कठिन मुकाबला जीता। इसलिए वह अपनी सफलता का श्रेय ढोल को देता और उसे ही अपना गुरु मानता था।

चरण 4: निष्कर्ष ढोल की ताल ने लुट्टन को साहस और दाँव-पेंच की प्रेरणा दी; इसीलिए उसने ढोल को गुरु कहा।

त्वरित सुझाव: गुरु कहने का कारण समझाते समय चाँद सिंह की कुश्ती और ढोल की प्रेरक ताल को साथ जोड़िए।

13(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए : 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ के आधार पर श्रम विभाजन और श्रमिक विभाजन में अंतर स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- श्रम-विभाजन कार्यों का बँटवारा है, जबकि श्रमिक-विभाजन मनुष्यों को जन्म से निश्चित वर्गों में बाँधता है।
- अंतर स्पष्ट करने के लिए योग्यता और चुनाव की स्वतंत्रता की तुलना जातिगत बंधन तथा ऊँच-नीच से कीजिए।

चरण 1: अंतर का आधार श्रम-विभाजन समाज की कार्यगत आवश्यकता है और उसमें व्यक्ति की रुचि तथा क्षमता के अनुसार काम चुनने की गुंजाइश रहती है। जाति-प्रथा में काम जन्म के आधार पर निर्धारित होता है। वह श्रमिकों को ऊँच-नीच वाले स्थायी वर्गों में बाँटती है और पेशा बदलने की स्वतंत्रता रोकती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर श्रम-विभाजन में कार्यों का बँटवारा व्यक्ति की रुचि, योग्यता और क्षमता के अनुसार होता है। इसके विपरीत, जाति-प्रथा का श्रमिक-विभाजन जन्म के आधार पर मनुष्यों को ऊँच-नीच के स्थायी वर्गों में बाँटकर व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता रोकता है।

चरण 3: निष्कर्ष श्रम-विभाजन कार्यों की व्यवस्था है; जातिगत श्रमिक-विभाजन जन्म पर आधारित मानवीय विभाजन है।

त्वरित सुझाव: अंतर लिखते समय केवल काम का बँटवारा न बताइए; जन्म, ऊँच-नीच और व्यवसाय की स्वतंत्रता भी जोड़िए।

13(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए : 'काले मेघा पानी दे' पाठ में जीजी किसान के उदाहरण द्वारा क्या सिद्ध करना चाहती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीजी किसान के बीज बोने को उदाहरण बनाकर त्याग और प्राप्ति का संबंध समझाती हैं।
- उनकी आस्था के अनुसार पहले कुछ देने से ही बड़े फल की आशा सार्थक होती है।

चरण 1: किसान के उदाहरण का आशय किसान अपनी बची हुई अच्छी उपज में से बीज निकालकर खेत में बिखेरता है। ऊपर से यह अनाज खोना लगता है, लेकिन उसी से आगे भरपूर फसल मिलती है। जीजी इसी आधार पर इंदर सेना पर पानी डालने को व्यर्थ खर्च के बजाय वर्षा की आशा से किया गया दान और त्याग मानती हैं।

चरण 2: जीजी का दृष्टिकोण यह तर्क जीजी की लोक-आस्था को व्यक्त करता है। वे अभाव में भी दान करने को महत्त्व देती हैं; उत्तर में इसी भावना को किसान के बीज त्यागने से जोड़ना चाहिए।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर जीजी समझाती हैं कि किसान अच्छी फसल पाने के लिए अपने बीज खेत में डालकर उनका त्याग करता है। इसी तरह वर्षा की कामना में थोड़ा पानी देना व्यर्थ नहीं है। कुछ पाने के लिए पहले कुछ देना आवश्यक है।

चरण 4: निष्कर्ष जीजी किसान के उदाहरण से सिद्ध करती हैं कि बड़ी प्राप्ति के लिए पहले कुछ त्याग करना पड़ता है।

त्वरित सुझाव: किसान के बीज और पानी के दान का संबंध स्पष्ट कीजिए; उदाहरण को केवल खेती का वर्णन न बनाइए।

13(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए : बाज़ार जाते समय हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, जिससे बाज़ार के जादू से बचा जा सके ? 'बाज़ार-दर्शन' पाठ के संदर्भ में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का आकर्षण मनुष्य की इच्छाओं को बढ़ाकर अनावश्यक खरीदारी के लिए प्रेरित करता है।
- लेखक आवश्यकता की स्पष्ट पहचान और मन के संयम को इस आकर्षण से बचने का उपाय मानते हैं।

चरण 1: मूल आवश्यकता पहचानना पाठ में बाज़ार का जादू तब प्रभावी होता है जब व्यक्ति बिना निश्चित उद्देश्य के वस्तुओं की चमक-दमक देखने निकलता है। खरीदने से पहले अपनी वास्तविक जरूरत जानना आवश्यक है। लेखक के अनुसार मन खाली होने पर हर आकर्षक वस्तु उपयोगी लग सकती है। इसलिए धन उपलब्ध होने भर से खरीदारी उचित नहीं हो जाती। वस्तु की जरूरत और अपने जीवन में उसकी उपयोगिता को कसौटी बनाना चाहिए।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर बाज़ार जाते समय अपनी वास्तविक आवश्यकताएँ स्पष्ट रखनी चाहिए। मन को वस्तुओं के आकर्षण में भटकने न दें और केवल उपयोगी सामान खरीदें। पैसे की ताकत दिखाने तथा अनावश्यक वस्तुएँ जुटाने की इच्छा से बचकर बाज़ार के जादू से बचा जा सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष आवश्यकता का विवेक और इच्छाओं पर नियंत्रण ही बाज़ार के जादू से बचने का उपाय है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में जरूरत पहचानने और अनावश्यक खरीदारी से बचने को जोड़ें; केवल कम पैसे ले जाने को उपाय न मानें।

14(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए : 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मुख्य समस्या पर विचार कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में यशोधर बाबू और उनके परिवार के माध्यम से पीढ़ियों के बदलते जीवन-मूल्यों का संघर्ष उभरता है।
- पारिवारिक संबंधों में संवाद और संवेदना की कमी इस वैचारिक दूरी को अधिक तीखा बनाती है।

चरण 1: केंद्रीय द्वंद्व पहचानना यशोधर बाबू सादगी, परंपरा और पुराने संस्कारों से जुड़े हैं। उनके बच्चे आधुनिक रहन-सहन तथा उपभोक्तावादी जीवन को अपनाते हैं। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का उत्सव भी इस भिन्न मानसिकता को सामने लाता है। इस दूरी का कारण केवल उम्र का अंतर नहीं, जीवन की प्राथमिकताओं का बदलना भी है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर 'सिल्वर वैडिंग' की मुख्य समस्या पुरानी और नई पीढ़ी के जीवन-मूल्यों का टकराव है। परंपराप्रिय यशोधर बाबू परिवार की आधुनिक, प्रदर्शनप्रिय जीवनशैली से सामंजस्य नहीं बैठा पाते। पारस्परिक समझ और संवाद की कमी उन्हें अपने ही घर में अकेला तथा उपेक्षित बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी पीढ़ियों के वैचारिक अंतर से उत्पन्न पारिवारिक दूरी और यशोधर बाबू के अकेलेपन को उजागर करती है।

त्वरित सुझाव: मुख्य समस्या बताते हुए पीढ़ीगत टकराव के साथ यशोधर बाबू पर पड़े भावनात्मक प्रभाव का उल्लेख करें।

14(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'जूझ' कहानी के लेखक का संघर्ष हमारे लिए प्रेरणादायक है, कैसे ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक कथा में शिक्षा प्राप्त करने का संघर्ष केंद्रीय है।
- परिश्रम, दृढ़ संकल्प तथा शिक्षक का मार्गदर्शन कठिन परिस्थितियों में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

चरण 1: संघर्ष के ठोस आधार लेखक को खेती के काम और पिता के विरोध के कारण पढ़ाई में बाधाएँ आती हैं। वे शिक्षा को जीवन बदलने का साधन समझकर पुनः विद्यालय जाने का प्रयास करते हैं। पढ़ाई के साथ काव्य-रचना में भी उनकी रुचि विकसित होती है। वे कठिनाइयों को पढ़ाई छोड़ने का स्थायी कारण नहीं बनने देते। यही सक्रिय प्रयास उनके संघर्ष को प्रेरक बनाता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर 'जूझ' के लेखक आनंद यादव गरीबी, खेती के कठिन श्रम और पिता के विरोध के बावजूद शिक्षा पाने का संकल्प नहीं छोड़ते। वे मेहनत, लगन और शिक्षकों के मार्गदर्शन से आगे बढ़ते हैं। उनका संघर्ष सिखाता है कि दृढ़ इच्छाशक्ति से बाधाओं पर विजय पाई जा सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक का जीवन संघर्षों के बीच शिक्षा, परिश्रम और आत्मविश्वास का महत्त्व स्थापित करता है।

त्वरित सुझाव: प्रेरणा को सामान्य उपदेश तक सीमित न रखें; पिता का विरोध, खेती और शिक्षा के लिए प्रयत्न से जोड़ें।

14(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

सिंधु सभ्यता को लघुता में भी महत्ता का अनुभव करने वाली संस्कृति कहे जाने का क्या आधार है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सिंधु सभ्यता की विशेषता भव्य राजसी प्रदर्शन की अपेक्षा दैनिक जीवन की सुव्यवस्था और कलात्मकता में प्रकट होती है।
- छोटी वस्तुओं में सूक्ष्म सौंदर्यबोध तथा उपयोगिता का मेल उसकी सांस्कृतिक परिपक्वता बताता है।

चरण 1: लघु वस्तुओं में सांस्कृतिक महत्ता पाठ में मोहनजोदड़ो की पहचान विशाल राजमहलों या राजकीय आडंबर से नहीं बनती। मुहरें, मूर्तियाँ, खिलौने और दैनिक उपयोग की वस्तुएँ कलात्मक संवेदनशीलता दिखाती हैं। नगर की सफाई और सुव्यवस्था साधारण नागरिक जीवन के प्रति सजगता दर्शाती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर सिंधु सभ्यता की महानता विशाल राजमहलों में नहीं, सुव्यवस्थित नगरों और दैनिक जीवन की छोटी वस्तुओं में प्रकट होती है। छोटी मुहरों, मूर्तियों, खिलौनों तथा उपयोगी वस्तुओं की कलात्मकता उसके सूक्ष्म सौंदर्यबोध का प्रमाण है। इसलिए वह लघुता में भी महत्ता अनुभव करने वाली संस्कृति है।

चरण 3: निष्कर्ष छोटी कलात्मक वस्तुओं और व्यवस्थित जनजीवन में निहित सांस्कृतिक उत्कृष्टता इस कथन का आधार है।

त्वरित सुझाव: लघुता का अर्थ सांस्कृतिक हीनता न लिखें; छोटी वस्तुओं की कलात्मकता को सभ्यता की महानता से जोड़ें।